ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 दिसम्बर 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 25 दिसम्बर 2016 से 31 दिसम्बर 2016

पौ. कृ. – 12 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 54, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा में वैदिक संगीत संगोष्ठी

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा के तत्वावधान में वैदिक संगीत संगोष्ठी का एक कार्यक्रम रख गया। स्वामी दयानन्द जी के अधूरे कार्य को सफलता की ओर ले जाने का यह विनम्र मात्र प्रयास रहा। ईश्वरीय वाणी वेदादि शास्त्रों का अध्ययन तथा बच्चों में अन्तर्निहित शक्ति का विकास के लिए प्रयास करना इसका मुख्य उद्देश्य था ताकि बच्चे सन्मार्ग में जाते हुए देश धर्म तथा जाति के लिए कुछ अच्छा करने का संकल्प लें।

यह पावन पर्व डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल यूनिट–आठ के विट्ठल राजा हॉल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक रूप से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ से किया गया। इस शुभ अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा की प्रधान तथा विद्यालय की प्राचार्या डॉ श्रीमती भाग्यवती नायक ने उपस्थित सभी श्रद्धावान लोगों एवं ओडिशा के विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों से आए हुए विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ श्रेष्ठ बनने का संदेश दिया।

इस अवसर पर ओडिशा के चौदह डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों के कुल 70 विद्यार्थियों ने अपने सुमधुर कंठ से वैदिक संगीत प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में संगीत शिक्षकों का योगदान अपूर्व रहा। कुछ ही क्षणों में पूरा वातावरण वैदिक भजन व संगीत से गूँज उठा।

इस मौके पर स्थानीय समिति के अध्यक्ष श्री मदन मोहन पंडा जी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि यज्ञ की हर एक आहुति हमें परमात्मा के अधिक नज़दीक ले जाती है, वेद के ईश्वरीय ज्ञान से ही हमारा चरित्र निर्माण संभव है।

संगोष्ठी के शुभ अवसर पर अतिथि के रूप में आए मुख्य प्रवक्ता आर्य समाज, शहीद नगर के प्रधान इं. प्रियव्रत दास जी ने अपने वक्तव्य में वेदमंत्रों की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए ईश्वरीय ज्ञान, कर्म तथा उपासना के महत्व पर प्रकाश डाला और जीवन में सकारात्मक भावना तथा नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया।

इस संगोष्ठी में गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम, केन्द्रापडा, ओडिशा के संचालक श्री सुदर्शन शास्त्री तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने सुमधुर भजन सबका मन मोह लिया। इं. प्रियव्रत दास जी के द्वारा लिखित "Vedic Belief" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक बहुत सरल और विस्तार पूर्वक वैदिक सिद्धान्त, ऋषि प्रणीत विचार धारा, वैदिक मंत्रों के अर्थ सहित सुन्दर और सरल भाषा में रचित है जो कि छात्रों के लिए अति उत्तम, उपादेय तथा प्रेरणादायक है।

समापन समारोह में हिस्सा लेने वाले सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया। प्रथम स्थान पर डी.ए.वी. चन्द्रशेखरपुर, दूसरे स्थान पर डी.ए.वी. यूनिट–6, भुवनेश्वर एवं तृतीय स्थान पर एल.आर. डी.ए.वी. कटक के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम, केन्द्रापडा, ओडिशा के संचालक श्री सुदर्शन शास्त्री तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को अनुष्ठान की तरफ से "इनवर्टर" प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में आर्य युवा समाज की प्रधान श्रीमती नमिता मोहान्ती, अन्य डी.ए.वी. विद्यार्थियों के प्राचार्य–प्राचार्या एवं शिक्षक–शिक्षकाओं उपस्थित रह कर सभा की शोभा बढाया। अंत में शांति पाठ के साथसंगोष्ठी का समापन हुआ। विद्यालय के धर्म शिक्षक श्री संतोष कुमार पटनायक के देखरेख में पूरा कार्यक्रम सफल रहा।

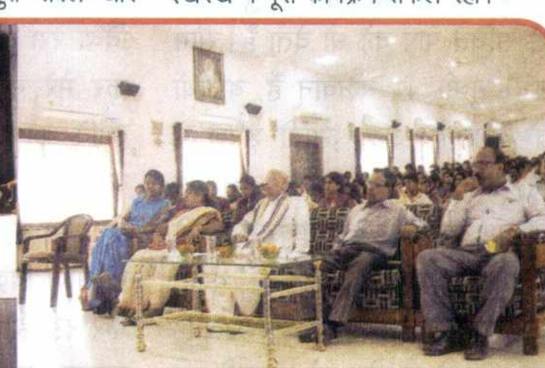

डी.ए.वी. सोनीपत का विद्यार्थी श्रेष्ठ जापान के लिए चयनित

स्थानीय विद्यालय डी.ए.वी. मल्टीपर्पस पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री वी.के. मित्तल ने बताया कि उनके विद्यालय में अपने समय के बाल वैज्ञानिक रहे श्रेष्ठ का जापान सरकार के द्वारा बी.टेक. के लिए चयन किया जाना देश के लिए गौरव का विषय है।

जापान सरकार भारत सरकार के साथ मिलकर अपने यहाँ से बी.टेक. कराने के लिए हर साल तीन विद्यार्थियों का चयन करती है। जिसके लिए प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसी प्रकिया के तहत श्रेष्ठ ने सुनिश्चित प्रतियोगी परीक्षा के लिए आवेदन किया उसके बाद चयन के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए अंतिम तीन में अपना स्थान सुरक्षित किया जिसके लिए जापान सरकार उसे 5 साल तक लगातार 7100रु0 की मासिक छात्रवृत्ति के साथ उसके रहने खाने की व्यवस्था का सारा व्यय स्वयं करेगी। इतना ही नहीं साल में एक बार अपने घर आने का आर्थिक भार भी जापान सरकार ही उठाएगी।

श्रेष्ठ ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय विद्यालय में बाल वैज्ञानिक के रूप में प्रोत्साहित करने वाले अपने प्राचार्य एवं शिक्षकों को देते हुए आभार व्यक्त किया। सभी शिक्षकों के साथ प्राचार्य महोदय ने श्रेष्ठ को इस सफलता के लिए बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उनके अनुसार श्रेष्ठ ने न केवल अपने अभिभावकों ,विद्यालय,जिले व प्रान्त का नाम रोशन किया है वरन देश का विश्व के मानचित्र पर प्रतिनिधित्व किया है।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 नवम्बर 2016 से 31 दिसम्बर 2016

प्रभु वर्षा की रिमझिम

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

शृण्वे वृष्टेरिव स्वन:, पवमानस्य शुष्मिण:।
चरन्ति विद्युतो दिवि।।

ऋग् ९.४१.३

ऋषि: **मेधातिथि: काण्व:**। देवता **पवमान: सोम:**। छन्द: **गायत्री**।

● **(शृण्वे)** सुन रहा हूँ, **(शुष्मिण:)** बलवान्, **(पवमानस्य)** पवित्रता–दायक सोम प्रभु का, **(वृष्टे: स्वन: इव)** वर्षा की रिमझिम जैसा, **(स्वन:)** नाद (हो रहा है)।, **(दिवि)** हृदयाकाश में, **(विद्युत:)** बिजलियाँ, **(चरन्ति)** चल रही हैं, चमक रही हैं।

● आज मेरे आत्म–लोक में बरसात छाई है। सोम प्रभु मेघ बनकर बरस रहे हैं। साधारण मेघ भी 'पवमान' होता है, क्योंकि वह पवित्रता–दायक निर्मल जल की वर्षा करता है; फिर मेरे सोम प्रभु 'पवमान' क्यों न हों। उनमें तो वह पवित्रता–दायक आनन्द रस भरा है, जो आत्मा और मन के युग–युग से संचित पाप को धो देता है। सोम प्रभु 'शुष्मी' हैं, बलवान् हैं, बलियों के बली हैं। अत: अपनी शरण में आनेवाले को आत्मिक बल से परिपूर्ण कर देते हैं।उनसे बरसनेवाली बल की वृष्टि निर्बल को बली, असहाय को सुसहाय और उत्साह एवं जागृति से हीन को उत्साही एवं जागरूक बना देती है। आज मैं स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा हूँ कि शुष्मी पवमान सोम प्रभु की आनन्दमयी रिमझिम वर्षा मेरे अन्तलोक में हो रही है। वर्षा की रिमझिम में जो संगीत होता है, वैसा ही संगीत मेरी आत्मा में उठ रहा है। उस दिव्य संगीत में मैं अपनी सुधबुध खो बैठा हूँ। बल और आनन्द की रिमझिम के साथ–साथ शीतल, मन्द, सुगन्ध प्राण–पवन बहकर मेरे मानस में नवीनता और स्फूर्ति उत्पन्न कर रहा है। वर्षा होने पर जैसे भूलोक पर सर्वत्र हरियाली छा जाती है, ऐसे ही मेरा अन्तर्लोक भी सत्य, न्याय, दया, श्रद्धा आदि सद्गुणों की हरियाली से हरा–भरा हो गया है। बरसात में जैसे नदियाँ पर्वतों से नीचे मैदानों में बहने लगती हैं, ऐसे ही मेरे आत्मा के उच्च शिखरों पर बरसे हुए सोम प्रभु के दिव्य रस की नदियाँ नीचे अवतरण कर मेरे मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियों आदि को आप्लावित कर रही हैं। बरसाती आकाश में जैसे बिजलियाँ चमकती हैं, वैसे ही मेरे हृदयाकाश में आज दिव्यता की विद्युतें चमकार कर रहीं हैं। वे विद्युतें मेरे मानस को प्रकाश का सूत्र पकड़ा रही हैं। उन क्षणप्रभा विद्युतों से मैं अपने मानस में स्थायी विद्युद्–धारा को अर्जित कर रहा हूँ, जो जीवन–पर्यन्त मुझे ज्योति देती रहेगी। मैं मुग्ध हूँ प्रभु–वर्षा की रिमझिम पर, मैं मुग्ध हूँ दिव्य विद्युतों की द्युति पर। हे सोम प्रभु! ऐसी कृपा करो कि यह बरसात मेरे आत्म–लोक में सदा उमड़ती रहे, सदा मुझे दिव्य बलदायी रस और प्रकाश प्रदान करती रहे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

मानव जीवन गाथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि मन का मैल दूर करने और आत्मा को परमात्मा के निकट ले जाने का एक बहुत उत्तम मार्ग है–दु:खियों की सेवा। दु:खी की, निर्धन की, आर्त्त की सेवा करो, सहायता करो तो मन का मैल दूर होता है। उसमें दिव्यता और जागृति आती है। यह है आत्म दर्शन का मार्ग। यह है जीवन–गीत की वह तान जहाँ पहुँचकर यह गीत आनन्द से भरे अमृत का उछलता हुआ सागर बन जाता है।

अपने–अपने शरीर की रक्षा करो, अपने स्वास्थ्य को सुन्दर बनाओ और अच्छे स्वास्थ्य के लिए मन को प्रसन्न रखो। यह सब कुछ हो जाए, तभी मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है, नहीं तो उसमें और पशु में क्या अन्तर है? सच्ची मानवता प्राप्त करने के पश्चात् जीवन का सितार बजाओ। इसके झनझनाते तारों पर विश्व–कल्याण के गीत गाओ।

––अब आगे

सामवेद का एक मन्त्र है कि "आओ, प्रभु के गीत गायें।" प्रभु के प्यार का यह गीत ही विश्व–प्रेम और विश्व–कल्याण का गीत है। यही मनुष्य का सच्चा जीवन–गीत है। उसको गाने के लिए इसे यह चोला मिलता है। शेष बातों के लिए चौरासी लाख प्रकार के शरीर विद्यमान हैं। वहाँ जो कुछ करना चाहिए उसे यदि मनुष्य के शरीर में करने लगे तो फिर याद रखो, मनुष्य का यह शरीर जो मिला, व्यर्थ हो जायेगा। परन्तु कुछ लोग तो इस बात को समझते नहीं। मनुष्य का शरीर पाकर भी इनमें से कुछ बैल का कर्म करते हैं, सर्प का कर्म करते हैं, बिच्छू का करते हैं, कुत्ते और गधे का करते हैं। ये लोग जो केवल शरीर के लिए बोझे ढोते फिरते है, ये बड़े–बड़े सम्पत्ति वाले, कारखाने वाले, भूमियों वाले, जो अपने शरीर को नष्ट करके आत्मा को भूलकर केवल सम्पत्ति बनाते जाते हैं–यदि दूसरों के लिए बोझा ढोनेवाले बैल नहीं तो और क्या हैं? ये लोग धन के पुजारी बनकर निन्यानवे के चक्र में पड़कर केवल तिजोरियाँ भरते जाते हैं; न स्वयं खाते हैं न दूसरों को खाने देते हैं। जो दान का नाम सुनकर चौंक उठते हैं वे यदि साँप नहीं तो और क्या हैं? ये लोग जो तुच्छ स्वार्थ के लिए देश में रहने वाले विभिन्न लोगों को लड़ाते हैं, देश में फूट उत्पन्न करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति की निन्दा करके उसके दोष देखते–फिरते हैं, ये यदि डंक मारनेवाले बिच्छू नहीं तो और क्या हैं? ये लोग जो कामवासना से अन्धे होकर अपना और दूसरों का चरित्र बिगाड़ते हैं, जिन्हें कामवासना के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं, वे कुत्ते नहीं तो और क्या हैं?–मैं जानता हूँ कि ये कड़वी बाते हैं। परन्तु देखो मेरे भाई! देखो मेरी बहन! मेरी माँ! मेरे बच्चो! मनुष्य का यह शरीर बहुत कठिनता से मिलता है। इसे बैल का, बिच्छू का, सर्प का, गधे का और कुत्ते का शरीर बनाके अपना सर्वनाश न करो, नहीं तो अन्त–समय पर पछताओगे। अन्त–समय यही कहना पड़ेगा–

हम फूल चुनने आये थे बागे–हयात
(जीवनरूपी उद्यान) में।
दामन (पल्ला, अधोवस्त्र) को खार–ज़ार
(भयंकर काँटे) में उलझा के रह गये।।

जो व्यक्ति आत्मा का दर्शन किये बिना और ईश्वर को पाये बिना इस शरीर से जायेगा, उसका जीवन–गीत अधूरा रह जायेगा। चौरासी लाख वाद्यों को फिर से बजाने के पश्चात् पता नहीं कब सहस्त्रों–लाखों वर्षों के पश्चात् उसे फिर इस गीत को गाना होगा।

महर्षि याज्ञवल्क्य जब वन को जाने लगे तो गार्गी ने पूछा, "महाराज! आप जानते हो तो कृपा करके यह तो बताओ कि मनुष्य का कल्याण कैसे होता है?"

याज्ञवल्क्य ने कहा, "गार्गी! मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है। इस यज्ञ में जो व्यक्ति केवल सामग्री को ही इकट्ठा करता रहता है और सब–कुछ एकत्रित करके ब्रह्म का आह्वान नहीं करता, सब–कुछ उसके समर्पण नहीं करता, तब तक वह यज्ञ पूर्ण नहीं होता और जो यज्ञ को पूर्ण किये बिना चला जाये उसका कल्याण नहीं होता, क्योंकि उस एक पूर्ण ब्रह्म के अतिरिक्त शेष सब–कुछ नष्ट होनेवाला है। केवल वह ब्रह्म ही अमर है, वही सदा रहता है।"

परन्तु आज इस यज्ञ को पूर्ण करने की बात कौन कहता है। आत्मा को भूलकर ऐसा समझ लिया हमने कि यह शरीर ही सब–कुछ है, इसके लिए पाप करो, अत्याचार करो, भ्रष्टाचार करो, देश को नष्ट करो, जाति में फूट डाल दो, दूसरों को दास बना लो, इन्हें नष्ट–भ्रष्ट करो, सब उचित है।

सुनो! यह सब–कुछ उचित नहीं। जिस शरीर के लिए यह सब–कुछ करते फिरते हो वह रहेगा नहीं। ये बेटे–बेटियाँ और परिवार भी रहेंगे नहीं। धन, सम्पत्ति, मकान ओर कारखाने रहेंगे नहीं। ये सब तो उसको पाने के लिए सामग्री है जिसके लिए तुमने यज्ञ

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

देव दयानन्द के प्रति दीवानगी की बानगी

● देव नारायण भारद्वाज

सप्ताह–दर–सप्ताह के अन्तर से दूरभाष पर एक सन्देश आता रहा था– मैं आपसे मिलकर कुछ आवश्यक चर्चा करना चाहता हूँ। शर्मा जी से मिलकर किसे प्रसन्नता न होगी? जिन्होंने अपने आधीन कोतवाली की रिक्त पड़ी भूमि पर 'राष्ट्र–वन्दना भवन' स्थापित कर दिया। जिसके अन्तर्गत भव्य यज्ञशाला, पुस्तकालय, मन्त्र–स्तम्भ बना दिये। सथ ही शहीद वाटिका, महर्षि दयानन्द मुख्य द्वार, पं. राम प्रसाद बिस्मिल द्वार एवं अमर शहीद अशफाक उल्ला खां द्वार दर्शनीय बना दिये। आस पास के विद्यालयों के छात्र–छात्रायें यहाँ पर भ्रमण पर आते और ज्ञान वर्द्धन करते। उन्होंने राष्ट्र वन्दना भवन के उद्घाटन समारोह को ऐतिहासिक बना दिया। प्रादेशिक पुलिस महानिदेशक ने इसका उद्घाटन किया, तब सर्वधर्म गुरुओं ने सम्मिलित होकर सर्व सम्प्रदाय समभाव की भूमिका बना दी। शर्मा जी का कार्यक्षेत्र बदलते रहने के कारण राष्ट्र वन्दना भवन की पृष्ठभूमि राष्ट्र वन्दना मिशन के उच्च स्तर की ओर अग्रसर हो गयी। वे बागपत जनपद में पहुँचे तो वहाँ के मुख्य चतुष्पथ पर राष्ट्र–बलिदानियों की प्रतिमायें खड़ी करा दीं, और उसका नाम पड़ गया राष्ट्र–वन्दना चौक, जो जनपद की गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

राष्ट्र–वन्दना की भावना को दृढ़ बनाने के लिए शर्माजी ने बलिदानियों की तथ्यपरक चित्रावलियाँ सम्बन्धित कारागारों व फाँसी घरों के अभिलेखों के छाया चित्र व जीवन परिचय संग्रह करके विस्तृत ग्रन्थ "युग के देवता" नामक अनुसंधान प्रकाशित कर दिया। यही नहीं सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, डॉ. रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा चन्द्रशेखर आजाद द्वारा कहे गये संवाद एवं गाये गये गीतों का मिलाकर स्वरबद्ध कैसेट–सी.डी. की रचना कर दी। राष्ट्र–वन्दना के चरित्र के दर्शनार्थ एक बड़े व स्थायी चित्र को कलापूर्ण विधि से बनवा दिया, जिसमें चारों ओर अमर शहीदों के मध्य उनके प्रेरणा पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन करा दिये। अपने कार्यक्षेत्र के महाविद्यालयों में छात्र–छात्राओं के चरित्र निर्माण हेतु कार्यक्रमों को गति प्रदान की। जनपद बुलन्दशहर के उपनगर शिकारपुर में यह कार्यक्रम सिनेमा हाल के मंच पर हुआ, जिसमें अशफाक उल्ला खां (अमर शहीद) के पौत्र भी उपस्थित हुए। हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित जनों ने आदर्श व्यवस्था की थी। पूरा नगर बलिदानियों के रंग में रंगा दिखाई दे रहा था।

इन्हीं शर्मा जी की पद स्थापना पुलिस उपाधीक्षक के पद पर जनपद बुलन्दशहर के डिबाई क्षेत्र में हुई। यहाँ इन्होंने एक विचित्र तीर्थ यात्रा का क्रम जारी कर दिया। यह अपने आरक्षी दल के साथ ब्रह्म मुहूर्त में गश्त करते हुए पावनी गंगा के तट पर स्थित महर्षि दयानन्द स्मारक आश्रम कर्णवास पर पहुँच जाते, वहाँ के मन्त्री श्री गेंदालाल आर्य वहाँ पहले से ही उपस्थित मिलते। आश्रम की स्वच्छता व्यवस्था व अपनी स्नान व्यवस्था के बाद आश्रम यज्ञशाला में सामूहिक यज्ञ करते, मिलकर स्वल्पाहार बनाया जाता, जिसका आस्वादन करते; तब तक इनका राजकीय वाहन आ उपस्थित हो जाता; और शर्मा जी अपने दल के साथ क्षेत्रीय भ्रमण करते हुए अपने मुख्यालय पर लौट आते; और फरियादियों की पुकार सुनने व उसका निस्तारण करने में व्यस्त हो जाते। कर्त्तव्य दक्षता के लिए शर्मा जी को राष्ट्र स्तरीय सम्मान प्राप्त हो चुका है।

पैतृक परम्परा की प्राञ्जल परिणति महर्षि दयानन्द के प्रेरणातीर्थ पर प्राप्त कर शर्मा जी अन्तः तृप्ति का आधार बनी। महर्षि दयानन्द अपने जीवन काल में दस बार कर्णवास में प्रवास हेतु आये। महीनों यहाँ रहे। शस्त्र–शास्त्रार्थ पर विजय प्राप्त की, और यहाँ के क्षत्रियों व उनके सम्बन्धी राजपुत्रों ने महर्षि के वेद प्रचार अभियान में अपने प्राणपण से सहयोग किया। अपनी आरक्षी सेवा की चरमोपलब्धि पर राजकीय सेवा के साथ आत्मिक सान्त्वना–शान्ति प्राप्ति के बाद शर्मा जी ने कोई क्षेत्रीय पद स्वीकार नहीं किया और जनपद मुख्यालय पर कार्यकाल पूर्ण करके सेवा निवृत हो गये। स्थानीय लोगों को शर्मा जी तब भी पकड़ में नहीं आते थे, और अब भी नहीं आते हैं, क्योंकि अवसर पाते ही वे देश में भ्रमण पर निकल कर गुणी आर्य मनीषियों से जा मिलते हैं। कभी दूरभाष पर उनसे सम्पर्क किया जाता है तो वे किसी अन्य ही नगर–महानगर या प्रदेश से उत्तर देकर अपनी उपस्थिति का आभास देते हैं। गत माह जब कर्णवास आश्रम के अधिवेशन में हम लोग भाग ले रहे थे, तब शर्मा जी का शुभकामना सन्देश केरल प्रदेश से आया था।

पाठक वृन्द लेखक को उसकी महान भूल के लिए क्षमा करेंगे, क्योंकि मैंने प्रारम्भ से अब तक जिस व्यक्तित्व के इस अप्रितम योगदान का गुणगान किया है; उनको मात्र शर्मा जी कह कर ही सम्बोधित किया है। नामोल्लेख नहीं किया है। पुलिस अधिकारी का नाम लेना आसान नहीं होता है। इनको दूर से नमस्कार करो तो कह देते हैं– घर से भिजवा देते, और पास में जाकर नमस्ते बोल दो, तो कह बैठते हैं कि सर पर चढ़ कर सलाम करोगे क्या? पर शर्मा जी के साथ यह बात नहीं है। आइए, उनका परिचय प्राप्त कीजिए। वे हैं पं. विद्यार्णव शर्मा। इनका पूरा परिवार महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित है। अग्रज डॉ. भारत भूषण शर्मा जी मोक्षायतन अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का संचालन करते हैं, और अब की विश्व योग दिवस मान्यता से कहीं पूर्व ही योग साधना को देश–देशान्तर में पहुँचाने के सम्मान स्वरूप राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' से वर्षों पूर्व अलंकृत किये जा चुके हैं। इन्हें अमर शहीद सरदार भगत सिंह की जननी राष्ट्रमाता विद्यावती जी द्वारा हृदय से लगाये जाने पर अपार गर्व है। इसीलिए विद्याणवि शर्मा के सभी आयोजनों में सरदार भगत सिंह के कनिष्ठ भ्राता राष्ट्र रत्न सरदार कुलतार सिंह का शुभागम एवं सम्बोधन उनके दीर्घ जीवन के अन्त तक बना रहा था।

शर्मा जी के पितृवर्य स्व. पण्डित विशम्भर सिंह जी को राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जी के कर कमलों से जिस समय प्रदान किया गया था, उस समय का चित्र अत्यन्त आकर्षक व प्रेरणीय बन गया था; क्योंकि एक पगड़ीधारी के सामने दूसरे पगड़ीधारी एक दूसरे को अवलोकन कर प्रसन्न हो रहे थे। पण्डित जी की दयानन्द के प्रति दीवानगी का पता आपको उनकी अन्तिम सांसों की बेला में गायी गयी–"दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे" पंक्तियों से लग जायेगा। लेख के इस अन्तिम छोर को प्रारम्भिक छोर से जोड़िये। विद्यार्णव शर्मा दूरभाष पर बोल कर वायु की भाँति आते, कोई आदेश–आग्रह करते और वायु की भाँति ही उड़कर चले जाते। इस बार उनका आदेश था–नवनिर्मित विशाल आयुक्त–आवास के प्रवेशारम्भ पर यज्ञायोजन समारोह, जो प्रभुकृपा से भव्यरूप से पूर्ण हुआ। शर्मा जी से राज के साथ समाज की व्यस्तता के विषय में पूछे जाने पर उनका एक ही उत्तर होता – ऐसा शुभावसर फिर कहाँ? पं. रामप्रसाद बिस्मिल के स्वर में स्वर मिला कर बोल पड़ते।

खे लेने दो आज नाव, कल कर पतवार गहे न गहे।
जीवन सरिता में शायद फिर ऐसी रसधार बहे न बहे।
अन्तिम सांस निकलने तक है बिस्मिल की अभिलाष यही,
तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहे न रहे।।

पता– 'वरेण्यम' अवन्तिका (I)
रामघाट मार्ग
अलीगढ़ (उ.प्र.)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

www.thearyasamaj.org

बीस मिनट का हवन–चौबीस घंटे का प्रदूषण मुक्त संरक्षण

● **आचार्य आर्यनरेश**

(यज्ञ वातावरण में बढ़ रहे So_2, No_2, Co, SPM व ग्लोबल वार्मिग (ताप) से बचने का सरल रक्षाकवच) है देश व विदेश में अनेक स्थानों पर किए जा चुके परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ मात्र एक धार्मिक पूजा पाठ ही नहीं, अपितु वर्तमान के प्रदूषित वातावरण से मुक्त रहने का एक महान् सुरक्षा कवच है। 'यज्ञ' जहाँ मानसिक रोगों, शारीरिक रोगों तथा वनस्पतियों के विभिन्न रोगों को दूर करके उन्हें स्वस्थ तथा उन्नत करता है, वहाँ वर्त्तमान के प्रदूषित वातावरण से बचने का एक प्रमुख वैज्ञानिक साधन भी है।

वर्त्तमान का प्रत्येक बुद्धिजीवी व सम्पन्न व्यक्ति समाज में बढ़ते हुए प्रदूषित वातावरण से विशेष चिन्तित है, क्योंकि इससे बढ़ने वाले कैंसर, दमा, श्वाँस, पोलियो तथा एलर्जी आदि के अनेक रोग तीव्र गति से मनुष्यों की जान ले रहे हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति की बड़ी–बड़ी डिग्रियां तथा धनवान व्यक्ति की बड़ी–बड़ी धनराशियाँ कुछ भी काम नहीं आती, जब वह व्यक्ति किसी कैंसर जैसे रोग का शिकार हो जाता है। ऐसे रोगों का चिन्तन मात्र ही व्यक्ति को इसलिए भी भयभीत कर देता है, क्योंकि इनका पता ही रोगी को तब चलता है, जब ये अपना पूरा जाल शरीर में बिछा चुके होते हैं।

यदि वर्त्तमान के बुद्धिजीवी व धनाढ्य लोग इस रोग के आतंक से मुक्ति चाहते हैं तो हमारा यह सुझाव है कि वे प्रतिदिन अपने घर पर यज्ञ किया करें। प्रातः काल केवल बीस मिनट के समय में थोड़ी सी सामग्री तथा घृत से होने वाला यह वैदिक यज्ञ आपको लगभग 24 घंटे तक एक 'कवच' की तरह प्रदूषित वातावरण से बचाता रहेगा। विज्ञान के मूलस्रोत अथर्ववेद में यह कहा भी गया है कि **'तम् आहरामि निर्ऋते उपस्थात्'** अर्थात् यज्ञ करने वाले को यज्ञ की पावन अग्नि मृत्यु की कोख से भी बचा लाने की शक्ति रखती है। विशेष जानकारी हेतु पाठकवृन्द हमारी 'यज्ञ विज्ञान परिचय' पुस्तक पढ़ें।

हमारे पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से सल्फर, नाइट्रोजन, कार्बनडाईऑक्साइड, मोनोऑक्साइड तथा एस.पी.एम. (सस्पैन्डिड पार्टीकुलेट मैटर) रहते हैं। ये जीवन के लिए उस समय घातक हो जाते हैं, जब गाड़ियों तथा फैक्ट्रियों से निकलने वाले ऑक्साइड जैसे कि सल्फर डाईऑक्साइड (So_2) नाइट्रसऑक्साइड (N_2o) व मोनोऑक्साइड (Co) तथा लैड की मात्रा को अनुपात से अधिक बढ़ा देते हैं। फटती हुई ओजोन लेअर, धुएँ में बढ़ते हुए वैश्विक तापमान (ग्लाबल वार्मिग) तथा धूएँ का बढ़ते हुए लैड युक्त एस.पी.एम. मनुष्यों के लिए कैंसर जैसे भंयकर रोगों का कारण बन रहे हैं। इनसे शीघ्र बचने का सरल व सर्वोत्तम साधन केवल महर्षिदयानन्द द्वारा प्रदर्शित वैदिक आर्ययज्ञ ही है। मात्र बीस मिनट में गुड़, चावल, गुग्गल, गिलोय व गोघृत और आम आदि की समिधा भी प्रयोग करके हम यज्ञ का अनुष्ठान कर सकते हैं। यदि सभी मंत्र न आते हों तो उनके सीखने तक हम गायत्री मंत्र से भी पैंतीस आहुतियाँ डाल सकते हैं। (बत्तीस प्रातः सायं की और तीन पूर्णाहुति मिलकर पैंतीस होती हैं) गिलोय आदि के साथ कुछ मात्रा में अगर–तगर व दूसरी सामग्री भी मिलाई जा सकती है। इन उपर्युक्त जड़ी बूटियों के जलने से–फार्मेल्डीहाइड, इथाइल–मिथाईल अल्कोहल व प्रोपीनोईक एसिड डिस्फैक्टिव तत्त्व निकलते हैं, जो पूरा दिन शरीर के भीतर व बाहर कवच के रूप में आपको घर तथा बाहर के प्रदूषित वातावरण से बचाते रहते हैं। यज्ञ–हवन से निकलने वाले ये मूल्यवान तत्त्व आर्यप्रमाण हवनकुण्ड के उच्च तापमान में कम्बश्चन व डिफ्यूज़न द्वारा प्रदूषित वातावरण में उपस्थित सल्फरडाई ऑक्साइड, नाइट्रस particulate matter is randered harmless by coming„ in to contact with vapours of Yajna ghee (Clarified butter) and other antiseptic gases released during Hawan. Methane present in cowdung breaken up and produces sufficient Hydrogen which is the best mean of checking Global warming. It also helps in water purification by checking acidic rain.

About 120 years ago, Maharishi Dayanand ji mentioned about the power of chemical purification by Yajna in the 3rd Chapter of his immortal composition Satyarth Prakash. He was a Vedic Scholar, Scientific Thinker and our first crusader of India's Independence. The process of Vedic Yajna purifies the atmosphere and replenishes oxygen and protects ozone layer and this saves mankind from many diseases and natural calamities. By doing Abhyantar Kumbhak 5 times or Udagheeth Pranayam 10 times, the beneficial gases produce during Hawan enter the respiratory system and provide immunity power to our bodies against the disease producing micro organisms.

The Yajna ash should be sieved through fine Muslin clothes and four tea spoon full of it added to the pitch of water which may be used during the day. It will be beneficial for high Blood pressure, Diabaties etc. Our ancient Sages and Saints had been using the sacred ash to ward of many diseases and lived a long peaceful life Why can't we do so by adopting the time tested process of Hawan yajna which is the only safe and simple way to save mankind from physiail. moral and spiritual degradation.

For more knowledge read Satyarth Prakash & Comniotery on Vedas by MAHARISHI DAYANAND SARASWATI.

–उद्‌गीथ स्थली
हिमाचल प्रदेश

“आज तो धंधा मंदा है”

● **डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा**

(यह संक्रान्ति काल है। संक्रान्ति काल उसे कहा जाता है जब दो संस्कृतियों, दो पीढ़ियों या दो विचारधाराओं का टकराव होता है। क्या आज वह स्थिति नहीं है? हमारी प्राचीन संस्कृति में जिन वेद मंत्रों या वैदिक सूक्तियों को मानव मात्र का उपकारक माना जाता है। कहीं वे आधुनिक परिप्रेक्ष्य या संदर्भ में अप्रासंगिक तो नहीं होते जा रहे हैं? कहीं वे अपनी अर्थवत्ता तो नहीं खो रहे हैं? क्या आधुनिक भौतिक संस्कृति हमारी प्राचीन संस्कृति पर हावी तो नहीं हो रही है? इस संदर्भ में अपना अनुभव आप तक पहुँचाना चाहूँगा।

मैं अपनी बात यहाँ से शुरू करता हूँ। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह सामाजिकता एक रूप में अच्छी भी है क्यों कि इसके माध्यम से व्यक्ति का परिचय क्षेत्र बढ़ता है परन्तु एक हानि भी है और वह हानि यह है कि एक सामाजिक व्यक्ति तो प्रत्येक पड़ोसी के दिवंगत होने पर श्मशान घाट जाता है। जब कोई व्यक्ति कई बार श्मशान घाट जायेगा तो उसका मृतक व्यक्तियों का दाह संस्कार करने वाले पंडित जी से परिचय तो हो ही जायेगा। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ और मृतक व्यक्तियों अर्थात् मुर्दो का दाह संस्कार करने वाले पंडित जी से मेरा परिचय हो गया।

एक दिन जब मैं एक शवयात्रा में श्मशान घाट पहुँचा तो नमस्ते करने के उपरान्त अचानक पंडित जी के मुख से निकला– “शर्मा जी, आज तो धंधा मंदा है।”

मैं चौंका, मैंने सोचा, पंडित जी कौन सा धंधा करते होंगे?

अतः मैंने पूछा, “पंडित जी, कौन सा धंधा?”

“शर्मा जी, हमारा धंधा है, मृतकों का दाह संस्कार करना। यही हमारी रोजी–रोटी है। जब वे मरेंगे ही नहीं तो हमारा धंधा मंदा हो ही जायेगा और तब हम भूखे मरेंगे।”

“तो आपके हिसाब से आपकी रोजी–रोटी के लिए व्यक्ति का मरना आवश्यक है?”

“हाँ, क्यों नहीं। जैसे एक दुकानदार के लिए ग्राहक भगवान का रूप होता है उसी प्रकार हमारे लिए मृतक व्यक्ति भगवान से कम नहीं है।”

“पर आप क्यों कह रहे हैं कि आज धंधा मंदा है?”

“आज सवेरे से घाट में एक भी मुर्दा नहीं आया। लगता है जैसे मरने वालों का अकाल हो गया है।”

“पंडित जी, आप बड़े विचित्र आदमी हैं। हमारे वेद मंत्रों में कहा गया है **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** अर्थात् सब लोग सुखी हों और एक आप हैं जो लोगों के मरने की कामना कर रहे हैं।”

“शर्मा जी, वेद मंत्र आदर्श वाक्य हैं। ये दीवार पर टांगने के लिए होते हैं, यथार्थ जीवन के लिए नहीं। मुझे पता है आप आर्य समाजी हैं। कल्पना कीजिए, आप आर्य समाज के चुनाव में प्रधान पद के प्रत्याशी हैं तो क्या आप अपने प्रतिद्वन्द्वी प्रत्याशी के लिए सुख की कामना करेंगे? वह तो तब सुखी होगा जब वह जीत जाय और आप पराजित हो जाएँ।”

“चलिए, छोड़िए मंत्र के पहले भाग को, मंत्र का दूसरा भाग है– **'सर्वे सन्तु निरामयाः'** अर्थात् सब लोग रोग रहित हों। इस वाक्य के प्रति तो आपके मन में कोई शंका नहीं होगी?”

“महोदय, यदि इस वेद मंत्र के अर्थ को सभी डाक्टर या वैद्य जीवन में चरितार्थ करने लगें और सभी लोगों के रोग रहित होने की प्रभु से प्रार्थना करने लगें तो वे भी भूखे मरने लगेंगे। जब सब रोग रहित हो जाएँगे तो डाक्टरों के पास कौन जाएगा। कितनी विचित्र बात है, कई वैद्य औषधालयों में लिखवाते हैं– **'सर्वे सन्तु निरामयाः'** लेकिन मन ही मन सोचते हैं कि यदि लोग रोगी न हों तो हमारी रोटी–रोजी कैसे चलेगी?”

“चलिए, छोड़िये दूसरे भाग को भी। मंत्र के तीसरे भाग पर तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी? और तीसरा भाग है– **'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु'** अर्थात् सब कल्याण मार्ग के पथिक हों।”

“सुनिए बन्धु, ये सारी बातें ऋषि–मुनियों के मुख से ही शोभा देती हैं क्योंकि वे राग–द्वेष से मुक्त थे और उनका कोई भी शत्रु नहीं होता था। लेकिन आधुनिक सन्दर्भ में जो पाकिस्तान हम पर आक्रमण कर रहा है क्या आप उसके कल्याण की कामना करेंगे?”

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

पर्यावरण का स्वरूप

● डॉ. रोचना भारती

“पर्यावरण” शब्द द्वारा बोध्य अर्थ को व्यक्त करने के लिये संस्कृत में विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इन शब्दों में 'परिधि', 'परिभू', 'परिमण्डल', 'परिवेश' एवं 'मण्डल' शब्द का प्रयोग पर्यावरण की तुलना में और अधिक व्यापक अर्थों में किया गया है।

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्।।
अथर्ववेद–8.2.25

पर्यावरण : एक व्यापक तात्पर्यवान शब्द है। वर्तमान परिवेश में पर्यावरण से अध्येताओं और अनुसन्धित्सुओं को जो अभिप्रेत है वह लगभग वही है जिसे सांख्य ने प्रकृति का विस्तार एवं **ऋग्वेद के – 10.90.1** मन्त्र में 'पुरुष' द्वारा आवृत जगत् का आवरण कहा है। –

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
ऋग्वेद – 10.90.1

यह प्रकृति का विस्तार या पुरुष के आवरण जगत् के समस्त तत्वों को समेटे हुए है। इस रूप में पर्यावरण अपने कलेवर में बहु–आयामी अर्थ को समेटे हुए है। वस्तुतः पर्यावरण एक पारिभाषिक शब्द है, अपने रूप में मूलार्थ को गौण करता हुआ, जगत् की समस्त प्रक्रियाओं, अनुक्रियाओं एवं उनसे होनेवाली पारिस्थितिक प्रतिक्रियाओं के योग के स्वरूप को स्पष्ट करता है। महर्षि दयानन्द ने अपने वेद भाष्य में इसे और स्पष्ट करते हुए – **सर्वलोकावरणं** – अर्थात् समस्त लोकों का आवरण कहा है तथा

परितः सर्वतःसूत्रवद्दीयन्ते यः। यजुर्वेद भाष्य – 31.15

पर्यावरण का अभिप्राय उस समष्टि से है, जो मनुष्य और उसकी क्रियाओं को घेरे हुए है। पाणिनी व्याकरण के अनुसार यह शब्द **'परि'** तथा **'आङ्'** उपसर्ग पूर्वक **"वृञ आवरणे"** धातु से **ल्युट् प्रत्यय** के योग से निष्पन्न होता है। **"परि"** का अर्थ **सर्वतोभावेन** (चारों ओर) एवं **'आङ्'** का अर्थ सामान्यतः सामने तथा आवरण का अर्थ ढकना या आच्छादन करना होता है। **'परित आवृणोति** "अर्थात् प्राणी जगत को सब ओर से आवरण देने वाले प्रकृति के अंग पृथ्वी, जलवायु, अग्नि और आकाश पर्यावरण कहे जाते हैं। अंग्रेजी के environment शब्द के विन्यास से यह स्पष्ट है कि –'Environ' का अर्थ घेरना तथा 'ment' का अर्थ चतुर्दिश अर्थात् चारों ओर से, इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ हुआ चारों ओर से घेरना।

पर्यावरणीय विज्ञानवेत्ताओं ने धरती के बिगड़ते पर्यावरण पर अनेक स्तरों से चिन्ता प्रकट करते हुए वैदिक वाङ्मय के उन अंशों की समीक्षा की है, और माना है। प्रकृति पूजक वैदिक ऋषियों द्वारा प्रतिपादित पर्यावरणीय विषयक पन्चमहाभूत की शुद्धता के लिये अनेक महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं, मन्त्र हैं जो आज भी अत्यन्त प्रासंगिक व आवश्यक बताए गए हैं।

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण शब्द का नामतः उल्लेख नहीं मिलता। सर्वप्रथम **'डॉ. रघुवीर'** ने तकनीकी शब्द निर्माण के समय फ्रेंच भौतिकी शब्द enviroment के लिये पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया है। वे ही इस शब्द के प्रथम प्रयोक्ता हैं।

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण का चाहे उल्लेख नहीं हुआ परन्तु तत्व द्रष्टा वैदिक ऋषि–मुनियों ने अन्य विषयों के गंभीर चिंतन के समान पर्यावरण पर भी चिंतन किया था। उसके शोधक उपायों का विधान और प्रदूषण कारकों का निषेध किया था। जिस प्रकार वात, पित्त और कफ आदि की संतुलित व्यवस्था का नाम स्वस्थावस्था है और इनका संतुलन बिगड़ने का नाम रुग्णावस्था है, उसी प्रकार वायु, जल, मिट्टी आदि के संतुलन बने रहने से समस्त सृष्टि अपनी स्वस्थावस्था में रहती है। जब इन अवयवों का संतुलन बिगड़ जाता है तो इसमें रहने वाले जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, मानव समस्त प्रकृति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है और पर्यावरण दूषित होने से उनकी शारीरिक मानसिक प्रवृत्तियाँ अनिष्टकारी दिशा की ओर मुड़ने लगती हैं। अतः वेदों में जीवन की इस प्रकार व्याख्या की है जिससे पर्यावरण की समस्या उत्पन्न ही न होने पाए।

पर्यावरण का सम्बन्ध जहां संकुचित अर्थ में करते हुए उस वातावरण को व्यक्त करने के लिये किया जाता है, जहां मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य समृद्ध करते हुए जी सकता है वहीं परिधि शब्द उस वातावरण की ओर संकेत करता है जिसमें गौ, अश्व आदि पशु–पक्षी भी अपने जीवन को सुचारु ढंग से व्यतीत कर सकते हैं। कहना न होगा कि ऐसे वातावरण के निर्माण में मनुष्यों से सकारात्मक योगदान की अपेक्षा होगी।

प्राचीन ऋषि–मुनियों और मनीषियों की व्यापक दृष्टि उनके द्वारा अभिव्यक्त विचारों के साथ–साथ उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों में भी दिखाई देती है। पर्यावरण शब्द का प्रयोग जहां आधुनिक मानव स्वयं को केन्द्र में रखकर के उस वातावरण के अर्थ को व्यक्त करने के लिये करता है जिसमें मनुष्य सर्वतोभावेन स्वस्थ और सुरक्षित रह सके परन्तु वैश्विक चेतना वाले ऋषिगण स्वयं को या मनुष्य मात्र को केन्द्र में रखकर नहीं सोचते। उनकी सोच में मनुष्यों के अतिरिक्त न केवल अन्य प्राणी बल्कि वृक्ष वनस्पति जैसे पदार्थ भी रहते हैं, वृक्ष वनस्पति एवं वायु और आकाश मंडल की शुद्धि पर्यावरण के लिये महत्वपूर्ण है तो स्वयं मनुष्य का आचरण भी पर्यावरण का निर्माण करने वाले इन वृक्ष वनस्पतियों के लिये आवश्यक होगा। क्या स्वयं मनुष्य पर्यावरण के लिये **'पर्यावरण'** अर्थात् अपना प्रभाव डालने वाला नहीं है? अगर है तो क्या उस पर्यावरण के स्वास्थ्य के लिये मनुष्य को सर्व शुद्धिकरण कर्म करना आवश्यक नहीं है?

पर्यावरण के रूपः

आज पर्यावरण अपने प्रचलित अर्थों में भौतिक पर्यावरण के रूप में लिया जाता है, इसलिये चेतन–प्राणी के चारों ओर का वातावरण जिस पर उसका जीवन आधारित है, वह पर्यावरण है। इसे आधुनिक भाषा में ecosystem भी कहा जाता है। संपूर्ण पर्यावरण को तीन दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है–

1. **भौतिक प्राकृतिक पर्यावरण** – इसमें भौतिक जगत् सूर्य, चन्द्र, समुद्र, नदी, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश, फल–फूल, वनस्पतियां, अन्न–औषधियां आदि समस्त चर–अचर प्रकृति।
2. **सामाजिक पर्यावरण** – मानव जीवन जन्म से मृत्यु तक समस्त समाज, सामाजिक संस्थाएं जिसका मनुष्य एक अंग है।
3. **सांस्कृतिक पर्यावरण** – जिसमें सब संस्कार, धार्मिक मर्यादाएं, नैतिकता, साहित्य, कला आदि समस्त सांस्कृतिक वातावरण जीवन को प्रभावित करता है।

इसके विपरीत वैचारिक प्रदूषण भी अत्यधिक खतरनाक, जहरीला व मारक है क्योंकि प्रदूषण की शुरूआत तो मानसिक विचारों से होती है। विचारों की अपवित्रता तथा अपने गंदे सोच–विचारों से मनुष्य न स्वयं सुखी रहता है और न दूसरों को शान्ति से रहने देता है अपितु परस्पर लड़कर मानवता को ही समाप्त कर देता है। इसलिए वेदों में स्थान–स्थान पर मन के शिव संकल्प होने पर बल दिया गया है।

यजुर्वेद के निम्न मन्त्रों में मन के शिव संकल्प युक्त होने की कामना की गई है।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। – यजु.34.1

(हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्तिवाला जो मन जागते हुए का वा सोते हुए का दूर–दूर तक जाता है – चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान–साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आप की कृपा से शुभ विचार वाला होवे।)

येनेदं भूतंभुवनंभविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। – यजु. 34.4

(हे प्रभो! जिस मन ने अपनी चिन्तन शक्ति से भूत, वर्तमान और भविष्यत् तीनों कालों का पकड़ रखा है, जो सभी कालों के कार्यों का चिन्तन करने का सामर्थ्य रखता है, और जिस मन की शक्ति से सात होताओं द्वारा किये जाने वाले शुभ कर्म वा अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञ किए जाते हैं, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। – यजु. 34.6

(हे प्रभो! जैसे उत्तम कुशल सारथी घोड़ों को लगामों की सहायता से इच्छानुसार गन्तव्य स्थानों को प्राप्त कराता है, वैसे ही मन अपनी दुर्दमनीय शक्तियों से बलवान् मनुष्यों को भी इधर–उधर भटकाता रहता है। जो चेतना–स्थान में स्थित है, चंचल और शीघ्रगामी बलवान् है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शिव संकल्प वाला होवे।)

ये सभी प्रकार के प्रदूषण एक साथ दूर हो जाएं, पूरा वातावरण शुद्ध हो जाए इसका सबसे बड़ा और विश्वस्त उपाय है, तो वह है – **"पंचमहायज्ञ"** – जिनका ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है और ऋषियों ने उस पर विस्तृत चिंतन किया है। पंचमहायज्ञ करने से पूर्ण स्वास्थ्य, पूर्ण शान्ति, पूर्ण सुख और पूण आनन्द मिल सकता है। यज्ञ सब प्रकार के प्रदूषण को दूर करने में सक्षम है। मनु स्मृति में लिखा है –

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।
– मनु स्मृति 4.21

(अर्थात् – मनुष्य ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ सदा ही यथाशक्ति करता रहे, इन्हें कभी न छोड़े।)

अग्निहोत्र, स्वाध्याय, प्रवचन सभी यज्ञ हैं। यदि मनुष्य सुख–शान्ति आनन्द चाहता है तो इन यज्ञों को करने के लिये मजबूर भी है, जब मजबूर है तो न चाहने पर भी करना पड़ेगा क्योंकि वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में यज्ञ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रदूषण एक ऐसा जहर है जो क्रमशः पर्यावरण में भरता जा रहा है और कालान्तर में अपने जनक को ही भस्मासुर की तरह भस्म कर रहा है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार विगत एक शताब्दी में ही प्रकृति में लगभग 24 लाख टन आक्सीजन की कमी हो गई है। वायुमण्डल में आक्सीजन का प्रतिशत घटता जा रहा है।

7/एम.आई.डी.सी.
नेताजी सुभाष चंद्र मार्ग
सातपुर (नाशिक) 422007 (महाराष्ट्र)

www.thearyasamaj.org

वृक्ष सजीव हैं

● **डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'**

वृक्षों की सजीवता–निर्जीवता पर आर्य विद्वान् दो वर्गों में विभाजित हैं। कुछ वृक्षों को सजीव मानते हैं और कुछ निर्जीव। मुझ लेखक ने 'आर्य जगत्' में अप्रैल, 2011 में एक लेख दिया था जिसमें दर्शाया था कि वृक्षों में जीव है। उस लेख में केवल आधुनिक वनस्पति–विज्ञान की दृष्टि प्रस्तुत की गई थी, जिसके अनुसार वृक्ष 'लिविंग बीइंग' अर्थात् सजीव हैं। इस पत्रिका के अंक (7–13 अगस्त, 2016) में डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने यह निष्कर्ष दिया है कि वृक्ष सजीव नहीं हैं। व्यक्तिगत रूप से वेदालंकार जी मेरे वरिष्ठ एवं प्रणम्य हैं। वस्तुनिष्ठ रूप से 'वृक्षों में जीव न मानना' प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम, तीनों प्रमाणों के विरुद्ध है। विद्वान् लेखक के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके लेख के सात अंशों पर निम्नवत् निवेदन हैं–

स्थावर अर्थात् वृक्ष

मनुस्मृति का श्लोक है–

शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः।
वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्।।

–अध्याय–12, श्लोक–2

इसके अर्थ में महर्षि दयानन्द (सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास–9) लिखते हैं कि 'जो नर शरीर से चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म मिलता है...।' वेदालंकार जी कहते हैं कि "मनुस्मृति में केवल 'स्थावर' शब्द है, वृक्षादि नहीं। अतः हिन्दी में 'वृक्षादि शब्द' प्रक्षिप्त तथा अशुद्ध प्रतीत होता है।" इस सम्बन्ध में निवेदन है कि 'स्थावर' शब्द के अनेक अर्थ (अचर, अचल, वृक्ष, पर्वत आदि) होते हुए भी यहाँ दयानन्दोक्त 'वृक्षादि स्थावर' शब्द पूर्णतः सही और शुद्ध है।

इच्छा–द्वेषादि छः लक्षण

न्याय–दर्शन में आत्मा के छः लक्षण बताये गये हैं– इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख एवं ज्ञान। वेदालंकार जी का यह कहना सत्य है कि वृक्षों को खाद–पानी की आवश्यकता है न कि इच्छा; अफ्रीकी वृक्ष द्वारा मनुष्य का रक्त सोख लेना द्वेष नहीं; वृक्षों का हिलना–डुलना 'प्रयत्न' नहीं है; छुई–मुई का मुरझाना सुख–दुःख नहीं और वृक्षों में किसी ने ज्ञान की सत्ता नहीं मानी है। परन्तु एक बात ध्यान देने योग्य है। हो सकता है वृक्षों में ये छः गुण न्यूनातिन्यून मात्रा में हों और मनुष्य की संवेदन–क्षमता से बाहर हों। वृक्षों में इन गुणों का होना दिखायी नहीं देता, मनुष्य को ज्ञात नहीं होता अथवा प्राप्त नहीं होता। परन्तु किसी आकर (खानरूप) ग्रन्थ में यह नहीं कहा गया है कि वृक्षों में ये छः गुण नहीं हैं। अतः यह कहने का आधार उपलब्ध नहीं है कि ये छः लक्षण वृक्षों में नहीं हैं और इस कारण वृक्ष सजीव नहीं हैं।

धौंकनी का श्वास?

लेख में कहा गया कि वृक्ष श्वास तो लेते हैं; किन्तु श्वास लेने के आधार पर वृक्षों में जीव नहीं माना गया। इसी क्रम में कहा गया कि श्वास तो लुहार की धौंकनी भी लेती है! वस्तुतः धौंकनी एक रिक्त बोरी की भाँति है जिसे लुहार एक हाथ से दबाता है। लुहार हाथ को ढीला करे तो धौंकनी के अन्दर वायु का दबाव घटने से बाहर की वायु अन्दर आ जाती है। वह हाथ दबा दे तो अन्दर की वायु बाहर निकल जाती है। धौंकनी का श्वास लेना वृक्ष की भाँति श्वसन न होकर यान्त्रिक कर्म है।

जीव और जीवन

'लाइफ' शब्द के दो प्रयोग हैं–(1) वस्त्र जैसे सिद्ध जड़ पदार्थों की लाइफ; (2) मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जड़–भिन्न पदार्थों की लाइफ। प्रथम वर्ग के पदार्थों में लाइफ का श्वसन से सम्बन्ध नहीं है और यह लाइफ तब तक चलती है जब तक कि पदार्थ क्षतिग्रस्त या नष्ट न हों। वृक्षों की लाइफ ऐसी नहीं है। द्वितीय वर्ग के पदार्थों में लाइफ श्वसन से प्रारम्भ होकर श्वसन तक चलती है और लाइफ से तात्पर्य है जन्म से लेकर मृत्यु तक की समयावधि। वृक्षों की लाइफ इसी प्रकार की है।

लेख में कहा गया है कि वृक्षों में जीवन (लाइफ) तो है किन्तु आत्मा (सोल) नहीं है। इस बात को इन शब्दों में भी कहा जाता है कि वृक्षों में प्राण है किन्तु आत्मा (जीव) नहीं। विचारने की बात है कि प्राण जड़ है और यह चेतन के आश्रय पर ही रह सकता है। चेतन दो हैं – परमात्मा और जीवात्मा। वृक्षों का प्राण परमात्मा के आश्रय पर नहीं है। परमात्मा के आश्रय पर हो तो उसका आना–जाना नहीं हो सकता अर्थात् वृक्षों का जन्म और मरण नहीं हो सकता। अतः यह प्राण जीवात्मा के आश्रय पर है अर्थात् वृक्षों में प्राण और आत्मा दोनों हैं। वृक्षों में जीव के बिना जीवन नहीं, अपितु जीव होने से जीवन है। मनुष्य एवं पशु–पक्षियों में भी ऐसा ही है।

विद्युत्–चन्द्रवत्

लेख में तीन समानतायें दी गई हैं – अफ्रीकी वृक्ष का मनुष्य को जकड़कर रक्त सोख लेना, विद्युत् का मनुष्य को पकड़कर रक्त सोख लेना और चन्द्रमा का समुद्र–जल को खींचकर ज्वार लाना। समानता के आधार पर विद्युत् एवं चन्द्रवत् वृक्ष को भी निर्जीव बता दिया गया है। वस्तुतः वृक्षों की सजीवता के भिन्न कारण हैं जो यथास्थान द्रष्टव्य हैं।

नर और मादा वृक्ष

लेख में कहा गया है कि नर पपीते पर भी छोटे–छोटे 2–4 फल आते हैं। वस्तुतः मादा पपीते पर ही फल आते हैं। नर पपीते पर कुछ अतिरिक्त वृद्धियाँ हो जाती हैं। इस प्रकार की वृद्धि को विज्ञान में 'एक्स्ट्रा ग्रोथ' और दर्शन में 'उपचय' कहते हैं। ये फल नहीं होते। अन्य वृक्षों पर नर एवं मादा दोनों धर्म पाये जाते हैं और मादा अंशों पर ही फल लगते हैं, नर अंशों पर कभी नहीं। नर अंशों का दाता होना और मादा अंशों का फलित होना वृक्षों का सार्वभौम धर्म है जो सम्पूर्ण वृक्ष–जाति में समान है। यह धर्म वृक्षों को सजीव सिद्ध करने के लिए अकेला ही पर्याप्त है।

गूलर के भुनगे

लेख में वृक्षों को स्थावर योनि नहीं माना गया; प्रकारान्तर से गूलर के वृक्ष को स्थावर योनि नहीं माना गया; अपितु गूलर के फल में विद्यमान भुनगों को स्थावर योनि माना गया है। वस्तुतः मनुस्मृति और सत्यार्थप्रकाश के अनुसार वृक्ष ही स्थावर योनि हैं। अतः योनि होने से वृक्ष सजीव हैं।

तीन प्रमाण

शास्त्रों में तीन सर्वमान्य प्रमाण हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम। इस पत्रिका के कुछ पाठक यह खोजते हैं कि महर्षि दयानन्द का स्पष्ट लिखा हुआ मिल जाए कि वृक्ष सजीव हैं अथवा निर्जीव। परन्तु ज्ञान के खोजकर्त्ता को तीनों प्रमाणों का समादर करते हुए वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष निकालना होगा। ऐसा नहीं कि किसी विद्वान् का वचन पढ़कर उसी को चरम सत्य मान लें अथवा स्वयं को पूर्ण शाकाहारी दिखाने के लिए सत्य–असत्य का परीक्षण छोड़ अवैज्ञानिक बुद्धि से मूली–टमाटर में जीव का होना साफ नकार दें। मनुष्य के लिए 100% अहिंसा असम्भव है। हमें कोई हिंसक न कह दे, इस भाव से मूली–टमाटर में जीव ही न मानना वेद–विरुद्ध है। बुद्धि से परीक्षण करें; तब निर्णय लें।

प्रत्यक्ष प्रमाण

वृक्षों और वनस्पतियों के विषय में प्रत्यक्ष प्रमाण इस प्रकार हैं कि – (1) लोहे के खण्ड भूमि में डालो तो ऐसे ही पड़े रहेंगे; गेहूँ के दाने डालो तो गेहूँ उत्पन्न हो जायेंगे; किन्तु कटा हुआ गेहूँ डालो तो वह अंकुरित न होगा। (2) चने का दाना भूमि में जम जाता है किन्तु भुना या गला हुआ चना नहीं अंकुरित होता। (3) धान अंकुरित हो जाता है किन्तु उसे छील दें तो भूसी और चावल अंकुरित नहीं होते। (4) अन्न के सूखे दाने बोरी में भरकर रख दें तो अंकुरित नहीं होते; किन्तु उन्हें गीला कर दे तो अंकुरित हो जाते हैं। (5) गुलाब, गिलोय या सदाबहार की टहनी काटकर भूमि में दबा दें तो उसी में से पौधा निकल आता है। (6) गन्ने के खण्ड भूमि में दबाने पर अंकुरित हो जाते हैं; किन्तु वे खण्ड अंकुरित नहीं होते जिनमें 'आँख' नहीं होती। (7) विज्ञान की एक शाखा है – जीवविज्ञान; आगे इसकी दो शाखायें हो जाती हैं– जन्तुविज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान; इससे स्पष्ट है कि वनस्पति–विज्ञान 'जीवों का विज्ञान' है। (8) वृक्षों में नर और मादा का विभाजन है; इससे स्पष्ट है कि वृक्ष सजीव हैं। (9) वृक्ष श्वास लेते हैं; कार्बन–डाइ–आक्साइड गैस भीतर लेकर आक्सीजन गैस बाहर निकालते हैं; श्वसन की इस प्रक्रिया में किसी अन्य प्राणी की सहायता अपेक्षित नहीं होती। (10) वृक्ष अपनी जड़ों से पानी खींचते हैं; इसमें भी बाह्य सहायता अपेक्षित नहीं होती। (11) वृक्ष भोजन करते हैं और इससे वृद्धि को प्राप्त होते हैं। (12) वृक्ष खाद का भी शोषण करते और उससे नियमानुसार प्रभावित होते हैं।

अनुमान प्रमाण

इन्द्रियों से ग्राह्य उपर्युक्त अनुभवों के आधार पर वनस्पति–शास्त्र वृक्षों को लिविंग बीइंग' घोषित करता है। 'लिविंग बीइंग' पदार्थ दर्शन–शास्त्र की दृष्टि में सजीव होते हैं, निर्जीव नहीं। प्रत्यक्ष प्रमाण हमें जीव–सत्ता की देहरी तक पहुँचाता है। देहरी से आगे अनुमान प्रमाण अग्रांकित समाधान कराता है:– (1) उपर्युक्त अनुभवों में बीज से अंकुर बनना, अंकुर से पौधा एवं वृक्ष बनना तथा आगे फल एवं बीज बन जाना क्रमिक प्रक्रियाएँ हैं जो अन्तः वृद्धि कहलाती हैं; इस अन्तः वृद्धि से जीव–सत्ता का अनुमान होता है। (2) लोहे का टुकड़ा न तो बढ़ता है और न सूखता है; पौधे बढ़ते हैं और सूखते भी हैं; पौधे का यह विकास जीव के होने और निकल जाने का अनुमान कराता है। (3) आम से आम होना और नींबू से नींबू होना वृक्षों का सार्वभौम नियम है; सजातीय की उत्पत्ति का यह समान धर्म 'जीव' की उपस्थिति का अनुमान कराता है। (4) अमरूद के वृक्ष का नियमित विकास एक अभिमानी जीव का अनुमान कराता है; उस वृक्ष पर लगे फलों में विद्यमान जीव अनुशयी जीव हैं, न कि उसके अभिमानी जीव। (5) गूलर के भुनगे पृथक् जीव हैं; उनके हटने से वृक्ष नही सूखता; वृक्ष के मूल में जो जीव है, उसके निकलने से वृक्ष सूखता है; इससे अनुमान होता है कि वही एक अभिमानी जीव है।

आगम या शब्द प्रमाण

वृक्षों की सजीवता के समर्थन में कतिपय शब्द प्रमाण निम्नवत् प्रस्तुत हैं:–

(1) तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः।।

– मनुस्मृतिः अध्याय–1, श्लोक–29

(पूर्वजन्मों के बुरे कर्मफलों के कारण बहुत प्रकार के अज्ञान आदि तमोगुण से घिरे हुए ये स्थावर जीव सुख–दुःख के भावों से संयुक्त और आन्तरिक चेतना वाले होते हैं।)

(2) वृक्षगुल्मलतौषधिवनस्पति तृणवीरुधादी नामपिभोक्तृ भोगाय–तनत्वं पूर्ववत्।। (सांख्य दर्शनः अध्याय–1, सूत्र–122)

(वृक्ष, झुरमुट, लता, ओषधि, वनस्पति, घास, बेल आदि का भी भोक्ता के भोगायतन होना मनुष्य, पशु आदि पूर्वोक्त के समान है। अतः वृक्षादि शरीर भी आत्मा की भोगयोनियाँ हैं।)

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

प्रेरक व्यक्तित्व : स्वामी श्रद्धानन्द

● डॉ. रमा

भारतीय जीवन को उच्चता प्रदान करने वाले और मानव जीवन को मानवीयता सिखाने वाले वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, और आर्य जाति की रक्षा के लिए तथा उसे पुनः प्राणवान एवं गतिवान बनाने के लिए और उसे सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाने के लिये आर्य समाज ने सैकड़ों बलिदान दिए हैं। ऐसे बलिदानों में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान अनन्य है। वे एक संघर्षशील समाज सुधारक, विचारक, असाधारण वाग्मी एवं संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। स्वामी श्रद्धानंद का नाम देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले उन महान बलिदानियों में बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है जिन्होंने अपनी जान की चिंता किए बिना ही स्वयं को देश–समाज के लिये समर्पित कर दिया। धर्म, संस्कृति और देश पर बलिदान होना आर्य समाज में सबसे बड़ा कर्म माना जाता है और यह तब और भी बड़ा हो जाता है जब वह स्वार्थ में न होकर देश और समाज के हित में हो।

स्वामी श्रद्धानंद सही मायनों में महान कर्मयोगी थे। निस्वार्थ भावना से कार्य करने वाले महान कर्मवीर थे। 'श्रद्धानंद' नाम उनके जीवन, कर्म और स्वभाव के साथ बिल्कुल मिलता भी है। भारत की स्वतंत्रता और स्वराज्य प्राप्त करने के लिए तथा भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलाने के लिए क्रांतिकारी प्रयास किए। उन्होंने धर्म बदलकर निजी स्वार्थ के लिए दूसरे धर्मों में चले गए हिंदुओं का शुद्धिकरण करने, दलितों को उनका अधिकार दिलाने और पश्चिमी शिक्षा की जगह गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा का प्रबंध करने जैसे मजबूत कदम उठाए। कर्मकांड और विभिन्न धर्मों–संप्रदायों में विभाजित हिंदुओं को एक साथ जोड़ना आसान नहीं था लेकिन स्वामी जी ने उसे कर दिखाया। 19वीं शताब्दी में हिंदू और मुस्लिम एकता को बढ़ाने वाला और उन्हें जोड़ने वाला यदि कोई सर्वमान्य नेता था तो वे स्वामी श्रद्धानंद ही थे। 4 अप्रैल, 1919 को मुसलमानों ने स्वामी जी को अपना नेता मानकर भारत की ऐतिहासिक जामा मस्जिद के मिम्बर पर बैठा कर स्वामी जी का सम्मान किया था। यह आर्यसमाज ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के लिए गौरव का दिन था। उन्होंने मनुष्य को मनुष्य समझकर व्यवहार किया। जाति और धर्म उनके लिए कभी बंधन नहीं रहे। भारत के इतिहास की यह एक मात्र ऐसी घटना है जहां मुसलमानों ने एक गैर मुस्लिम को मस्जिद की मिम्बर से उपदेश देने के लिए कहा। स्वामी जी ने अपना उपदेश **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शत् क्रतो बभूविथ** वेद मंत्र से शुरू किया और शांति पाठ के साथ अपने उपदेश को खत्म किया।

स्वामी श्रद्धानंद महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त थे। दयानन्द जी भी उन्हें बहुत स्नेह देते थे। श्रद्धानंद जी दयानन्द जी के उद्देश्यों के और सिद्धांतों के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। श्रद्धानंद के जीवन का सबसे मजबूत पक्ष यह था कि उन्हें आर्यसमाज के नियमों और विचारों पर अटल विश्वास था क्योंकि वह जानते थे कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो भारत को पराधीनता और गुलामी के गर्त से निकाल सकती है और रूढ़ियों से मुक्त करा सकती है।

क्रांतिकारी विचारों के निष्ठावान समाज–सुधारक श्रद्धानन्द का जन्म 22 फरवरी 1913 में पंजाब के जालंधर जिले में हुआ था। सतलुज नदी के किनारे बसा यह प्राकृतिक गाँव प्राकृतिक सम्पदा से पूरी तरह परिपूर्ण था, जिसका प्रभाव उनके जीवन पर भी पड़ा। उनके पिता, लाला नानक चन्द, ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस अधिकारी थे। उनके बचपन का नाम बृहस्पति और मुंशीराम था, किन्तु मुंशीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ। बचपन से ही मेधावी छात्र के रूप में उनकी ख्याति थी। पिता का स्थानांतरण अलग–अलग स्थानों पर होने के कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा बहुत बिखराव के साथ हुई। आरंभ में उनका जीवन बहुत अच्छा नहीं रहा। अपने पुत्र के नास्तिक होने की पीड़ा ने उनके पिता को चिंता में डुबो दिया। वह उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए कई तरह के प्रयास करते रहे।

समय सबसे बड़ा गुरु होता है। जीवन वही सिखाता है। 1936 में महर्षि दयानंद सरस्वती आर्यसमाज के विस्तार के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश के बरेली आए तो वहीं पर श्रद्धानंद जी के पिता नानकचन्द भी उन्हें लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुंचे। उनके उपदेशों को सुनकर मुंशीराम प्रभावित ही नहीं हुए बल्कि उनके प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हो गया। स्वामी दयानन्द के वैज्ञानिक और आधुनिक तर्कों ने बालक श्रद्धानंद को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया और वे आर्यसमाज से जुड़ गए। स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ बरेली में हुए सत्संग से उन्होंने जीवन का सूत्र पा लिया जिसे वे जीवन भर अपनाए रहे। आर्यसमाज में प्रवेश ने श्रद्धानंद जी का जीवन देदीप्यमान बना दिया। स्वामी दयानंद के प्रति उनका आदर जीवन भर बना रहा। उनका मानना था अगर वह बरेली न आते तो उनका जीवन अंधकारमय होता। अपनी जीवन गाथा **'कल्याण मार्ग का पथिक'** में उन्होंने स्वामी दयानन्द के प्रति आभार व्यक्त करते हुए लिखा था– "ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पट पर अब तक ज्यों–की–त्यों है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते–गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के सिवा जिसकी गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है। परंतु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सत्संग ने मुझे कैसे गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा लाभ करने के योग्य बनाया।"

स्वामी श्रद्धानंद जीवन भर दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तत्पर रहे उन्होंने गुरुकुल संस्थाओं का आरंभ कर देश में पुनः वैदिक शिक्षा को प्रारंभ कर महर्षि दयानंद द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार किया व उन्हें कार्यरूप में परिणित किया और उनके जरिए देश, समाज और स्वाधीनता के कार्यों को आगे बढ़ाने का युगांतरकारी कार्य किया। शुद्धि आंदोलन के जरिए विधर्मी जनों को आर्य (हिंदू) बनाने के लिए आंदोलन चलाए। दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांग्रेस के स्वाधीनता के आंदोलन का बढ़–चढ़कर नेतृत्व भी किया। कांग्रेस में उन्होंने 1919 से लेकर 1922 तक सक्रिय रूप से अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी की। 1922 में अंग्रेज़ी सरकार ने गिरफ्तार किया, लेकिन उनकी गिरफ्तारी कांग्रेस के नेता होने की वजह से नहीं हुई बल्कि सिक्खों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह करते हुए बंदी हुए थे। कांग्रेस में महात्मा गांधी के तुष्टीकरण के विचारों से मतभेद होने की वजह से उन्होंने त्यागपत्र दिया था। लेकिन देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य वे लगातार करते रहे। हिंदू–मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी ने जितना कार्य किया, शायद ही किसी ने अपनी जान जोखिम में डालकर किया हो। वे ऐसे महान युगचेता महापुरुष थे जिन्होंने युग की धड़कन को पहचान समाज के हर वर्ग में जनचेतना जगाने का कार्य किया। धर्म के सही स्वरूप को महर्षि दयानंद ने जनता में जो स्थापित किया था, स्वामी श्रद्धानंद ने उसे आगे बढ़ाने का निडरता के साथ कदम बढ़ाया।

उनके जीवन का सबसे निर्णायक और महत्वपूर्ण महानतम कार्य था, शुद्धि सभाओं का गठन। इसके माध्यम से वे भारतीय संस्कृति की क्षीण हो रही परंपरा को मजबूती प्रदान करना चाहते थे। उनका मानना था कि अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभ के कारण धर्मांतरण कर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना देश को मजबूत करने के लिए परम आवश्यक है। जहाँ–जहाँ आर्य समाज के लोग या कोई केन्द्र था स्वामी श्रद्धानन्द ने वहाँ–वहाँ शुद्धि सभाओं का गठन कराया और धीरे धीरे शुद्धि के इस प्रयास ने आन्दोलन का रूप ले लिया। स्वामी जी ने पश्चिम उत्तर के 89 गांवों के हिन्दू से हुए मुसलमानों को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल कर आदि गुरु शंकराचार्य के द्वारा शुरू की परंपरा को पुनर्जीवित किया और समाज में यह विश्वास उत्पन्न किया कि जो विधर्मी हो गए हैं, वे सभी वापस अपने हिन्दू धर्म में आ सकते हैं। देश में हिन्दू धर्म वापसी के वातावरण बनने से इस तरह के प्रयासों की एक लहर सी आ गयी। एक बार शुद्धि सभा के प्रधान को उन्होंने पत्र लिखकर कहा–अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं। उन्होंने भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना कर दो लाख से अधिक मलकानों को शुद्ध किया" उनका यही बयान उनके जीवन के लिए घातक बन गया। कुछ कट्टरपंथी मुसलमान इनके शुद्धिकरण के कार्य के खिलाफ हो गए थे। एक धर्मांध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने छल से 23 दिसम्बर, 1926 को चांदनी चौक दिल्ली में गोलियों से भूनकर उनकी हत्या कर दी। इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितोत्थान का यह युगधर्मी महामानव मानवता के लिए शहीद हो गया, लेकिन यह दिन एक महापुरुष के लिए बलिदान दिवस के रूप में सुरक्षित हो गया। स्वामी श्रद्धानंद ने दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांग्रेस के स्वाधीनता आंदोलन का बढ़–चढ़कर नेतृत्व भी किया।

महर्षि दयानंद ने राष्ट्र सेवा का मूलमंत्र लेकर आर्य समाज की स्थापना की। कहा था कि "हमें और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।" स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी को अपने जीवन कर मूलाधार बनाया। समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन का पता करें तो पाते हैं कि उन्होंने प्रबल विरोध के बावजूद स्त्री शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वयं अपनी बेटी अमृत कला को जब उन्होंने 'ईस–ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल' गाते सुना तो घर–घर जाकर चंदा इकट्ठा कर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना हरिद्वार में कर अपने बेटे हरिश्चंद्र और इंद्र को सबसे पहले

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

मेरी नैरोबी यात्रा

● श्री मामचन्द रिवाड़िया

संसार में विश्व आर्य महासभा का निर्माण हो, यह प्रस्ताव श्री वीरेन्द्र उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा ने रखा और मैंने उस प्रस्ताव का समर्थन किया। मैंने कहा कि जब तक राजनीति में स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा के व्यक्तियों का प्रादुर्भाव नहीं होता तब तक हम संसार में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों का भली प्रकार से प्रचार नहीं कर सकते। मेरे बोलने पर तालियों से स्वागत किया गया लेकिन किन्हीं कारणों से प्रस्ताव पारित न हो सका।

24-9-1978- यज्ञ के बाद जलपान आदि किया। 11 बजे प्रातः काल कार द्वारा केन्याटा हॉल गए। 12 बजे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन शुरू हुआ। सर्व प्रथम भिन्न-भिन्न आर्य संस्थाओं की ओर से आज के सम्मेलन के अध्यक्ष डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का स्वागत किया गया। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मैं पहली बार नैरोबी में 1924 में आया था जबकि नैरोबी आर्य समाज अपनी बाल्यावस्था में था। आज मुझे प्रसन्नता है कि अब आर्य समाज अपने पूर्ण यौवन पर है, मुझे पूर्ण आशा है कि किसी दिन नैरोबी आर्य समाज विदेशों में प्रचार का मुख्य केन्द्र होगा। आज संसार में जो अशांति व्याप्त है उसका मुख्य कारण यह है कि आज मानव-मानव से डरा हुआ है। आज की बदली हुई परिस्थिति में आर्य समाज यदि संगठित हो जाए तो वह संसार का नेतृत्व कर सकता है।

श्री वेदभूषण (हैदराबाद) ने सुझाव रखा कि 50 वर्ष से अधिक उम्र का व्यक्ति सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी न हो लेकिन यह सुझाव पारित न हो सका।

दूसरी बैठक 3 बजे शुरू हुई। सर्वप्रथम नैरोबी की बालिकाओं ने सुन्दर गान किया। इसके बाद विश्व की नागरिकता के विषय में प्रस्ताव श्री चिटाई (साउथ अफ्रीका) ने रखा। आपने कहा कि यह विश्व आर्य महा सम्मेलन संसार की सुख शांति के लिए तथा आर्य समाज के फैलाव के लिए विश्व की नागरिकता का समर्थन करता है। इस प्रस्ताव का समर्थन सर्वश्री नवनीत लाल तथा श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी ने किया।

संसार में विश्व आर्य महासभा का निर्माण हो, यह प्रस्ताव श्री वीरेन्द्र उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा ने रखा और मैंने उस प्रस्ताव का समर्थन किया। मैंने कहा कि जब तक राजनीति में स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा के व्यक्तियों का प्रादुर्भाव नहीं होता तब तक हम संसार में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों का भली प्रकार से प्रचार नहीं कर सकते। मेरे बोलने पर तालियों से स्वागत किया गया लेकिन किन्हीं कारणों से प्रस्ताव पारित न हो सका।

आर्य समाज के उप-नियमों का समय-समय पर संशोधन करने का प्रस्ताव श्री वीरेन्द्र जी ने रखा तथा समर्थन श्रीमती सुशीला (हैदराबाद) ने किया।

सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि नैराबी में आर्य समाज के विदेशों में प्रचारार्थ एक केन्द्र का निर्माण किया जाए जो विदेशों में समाज की प्रगति के लिए कार्य करे। यह केन्द्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के नेतृत्व में कार्य करेगा। प्रस्ताव डा. सन्त राम रक्खा ने रखा और सभी ने इसका समर्थन किया। अन्त में आज के संयोजक श्री सत्यदेव भारद्वाज तथा मंत्री श्री सत्यभूषण (नैरोबी) ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और शांति पाठ के बाद सम्मेलन शांति पूर्वक समाप्त हुआ।

25-9-1978- आज यज्ञ आदि करने के बाद मैं, श्री देवराज जी तथा पलटा जी बाजार घूमने के लिए निकले। श्री उत्तम चन्द शरद भी हमारे साथ थे। शापिंग करने के बाद पुनः हम दयानन्द होम में वापस आ गए।

शाम को 6 बजे नैरोबी निवासी श्री रमेशचन्द्र कपूर अपनी कार लेकर आए और हमको नैरोबी के दूरस्थ स्थानों को दिखाने के लिए ले गए। भ्रमण में हमने निम्न स्थान देखे-

1. आगा खाँ स्कूल-इस स्कूल में सभी जातियों के छात्र पढ़ते हैं। किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं है।

2. लेविस्टन रोड़-यहाँ पर पहले बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारी रहते थे। अब यहाँ पर ऐशियन लोग रहते हैं। यह नैरोबी की सबसे धनवान लोगों की बस्ती है। यहीं से महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आरम्भ किया था।

3. अफ्रीकन की बस्ती-यहाँ पर झोपड़ियाँ बनी हुई हैं और प्रायः अफ्रीकन लोग ही रहते हैं। हमें बताया गया कि रात को यहाँ पर एशियन लोग आने से घबराते हैं।

4. साउथ सी- यहाँ पर सभी वर्ग के लोग रहते हैं। यहाँ पर आर्य समाज का सुन्दर भवन बना हुआ है। समाज मन्दिर में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम जी आदि के चित्र लगे हुए हैं।

5. भारतीय दूतावास-यह केन्याटा बिल्डिंग के पास मेन रोड पर स्थित है। मुख्य द्वार पर त्रिमूर्ति लगी हुई है। भवन सुन्दर बना हुआ है। रात्रि 8 बजे हम दयानन्द होम वापस आए और भोजन किया। 9 बजे महिला सम्मेलन हुआ जिसमें वैरायटी शो का कार्यक्रम भी रखा गया जो बहुत सुन्दर था।

26-9-1978- आज यज्ञ आदि व जलपान करने के बाद मैं अपने साथियों के साथ एयर इण्डिया गया और वहाँ से एक दिन बम्बई में रुकने की सूचना भिजवाई। सायंकाल डा. सूरजभान, रामनाथ जी सहगल, श्री दरबारी लाल आदि के साथ नैरोबी के एक आर्य सज्जन के निवास स्थान पर जिनका नाम श्री सूरजभान जी था भोजन के लिए गए। भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था और उससे भी अच्छा उनका व्यवहार था जिसकी मैं प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सकता। श्री सूरजभान जी ने मुझे एक 760 ग्राम की कोकाकोला की बोतल भी भेंट की जिसे मैं दिल्ली लाया। रात्रि को नैरोबी की महिलाओं द्वारा आयोजित बहुत ही सुन्दर कार्यक्रम देखा। नैरोबी में कहीं पर भी मैंने बिजली का पंखा नहीं देखा। यहाँ पर मौसम एक-सा रहता है। ऐसे सुहावने मौसम में न गर्मी लगती है और न सर्दी ही महसूस होती है। यहाँ की गायें 40-40 किलो दूध देतीं हैं।

27-9-1978- आज प्रातः उठकर सारा सामान बाँधा। जलपान करने के बाद नैरोबी के अधिकारियों से महेन्द्र पाल हॉल में बातचीत हुई। श्री कपिला जी केनिया आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं उनसे भी मेरा चलते हुए काफी वार्तालाप हुआ। प्रातः 9 बजे दयानन्द होम से बस द्वारा हम लोग नैरोबी एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। 10 बजे नैरोबी ऐयरपोर्ट पर पहुँचे। चैकिंग होने के बाद हम बिजली से चालित सीढ़ियों पर चढ़कर नैरोबी एयरपोर्ट पर पहुँचे। यह हम लोगों के लिए अजीबोगरीब सीढ़ियाँ थीं। 12.45 पर हम मकालू जहाज पर चढ़े और ठीक 1.15 पर हमारा जहाज उड़ा। मैं और श्री देवराज गुप्ता बराबर सीटों पर बैठे और मेरी सीट खिड़की के पास थी। बाहर का दृश्य बड़ा ही लुभावना दिखाई देता था।

ठीक 2 बजे सुन्दर भोजन हमको दिया गया जिसमें चावल, रायता, मक्खन, डबल रोटी, चटनी, अचार, पापड़ तथा फलों की ठंडी चाट थी। 3 बजे हमारा जहाज आदिस अबाबा पहुँचा। बहुत ही सुन्दर एयरपोर्ट था। हमने जहाज पर से ही सारा एयरपोर्ट देखा। पायलट से मालूम हुआ कि एक घंटे रुकने पर उस सरकार को दो हजार डालर देना पड़ता है जिसके अधीन यह एयरपोर्ट होता है। 4.15 पर हमारा जहाज आदिस अबाबा से रवाना हुआ। इस जहाज में 162 सीटें हैं। 6.20 पर जहाज बम्बई के लिए रवाना हुआ। रात्रि समय जहाज से बम्बई का जो दृश्य मैंने देखा उसका मैं शब्दों में वर्णन करने में पूर्णरूप से असमर्थ हूँ। बिजली इस प्रकार चमक रही थी जैसे किसी ने जमीन पर हीरे जवाहरात जड़ दिए हों और वह अपने-अपने भिन्न-भिन्न रंगों में आभा दिखा रहे हों। 10 घंटे की जहाजी यात्रा के बाद हम सब आर्यजन सांताक्रूज एयरपोर्ट पर पहुँचे। कस्टम आदि कार्यवाही से निपट कर हम टैक्सी द्वारा श्री सतीशचन्द्र पलटा के निवास स्थान पर विश्राम के लिए गए। 28-29 को बम्बई घूमने के बाद 29 की संध्या 7.30 बजे सांताक्रूज से दिल्ली के लिए रवाना हुए। ठीक 9 बजे हम पालम एयरपोर्ट पर पहुँचे जहाँ पर मेरे कुटुम्ब के सदस्य मेरे स्वागतार्थ उपस्थित थे। टैक्सी द्वारा मैं अपने निवास स्थान के लिए रवाना हुआ और सकुशल अपने घर पहुँच गया।

नैरोबी से लौटने के बाद दिल्ली की अनेक आर्य समाजों ने हमारा स्वागत किया। प्रत्येक आर्यजन हमारे नैरोबी के संस्मरण सुन-सुन बहुत ही आनन्दित होते थे। बहुत से तो नैरोबी न जाने पर दुखी थे।

इस प्रकार हमारी 17 दिन की नैरोबी यात्रा हर प्रकार से यादगार यात्रा रही।

आर्य समाज टैगोर गार्डन
नई दिल्ली - 110027
मो. - 09212003162
फोन: 08700101500

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

मानव जीवन गाथा...

रचाया था। उसको जब तक पाओगे नहीं तब तक सुनो मेरी माँ! सुनो मेरे भाई! सुनो मेरे बच्चो! जीवन का गीत अधूरा रहेगा, संसार में सुख नहीं होगा। प्रगति और अशान्ति का बवंडर गरजता रहेगा। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं–

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।
यजु. 31।18।।

नहीं, और कोई मार्ग नहीं, कोई मार्ग नहीं। मृत्यु का अर्थ है दुःख, अशान्ति, विनाश, अज्ञान, गिरावट। मृत्यु को यदि जीतना है, इसे समाप्त करना है, तो केवल एक मार्ग है–उस परम पुरुष को जानो जो प्रकृति के अन्धकार से परे करोड़ों सूर्यों की भाँति चमक रहा है। यही मार्ग है।

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। और कोई मार्ग नहीं।

एक बार एक भक्त ने एक सन्त से पूछा, "ईश्वर को जाने बिना और आत्मा के दर्शन किये बिना भी सुख मिल सकता है या नहीं?" सन्त ने कहा, "हाँ, जिस दिन तुम खरबों मील में फैले हुए इस आकाश को चमड़े की भाँति लपेटकर अपने बगल में दबा लोगे, तब ईश्वर को जाने बिना भी सुख प्राप्त हो जायेगा।"

परन्तु यह आकाश केवल खरबों मीलों में फैला हुआ तो नहीं। कदाचित् खरबों गुणा खरबों मीलों में फैला हुआ है। तीन–चार हाथ का मनुष्य यदि इसे चमड़े की भाँति लपेटकर बगल में दबाना चाहे तो कैसे दबायेगा? और फिर यह आकाश लपेटने वाली वस्तु भी तो नहीं, इसे लपेटेगा कौन?

इसलिए एक बार पुनः सुनो! मैंने बहुत बार संसार देखा है, तुम धन–सम्पत्ति की बात कहते हो, मैंने देखा है उन्हें, और मैं कहता हूँ कि कहीं भी सुख नहीं, कहीं भी शान्ति नहीं, कोई भी इस आत्मा का साथी नहीं। इसका साथी केवल वह है जिसे नारद ने पुरञ्जन का अज्ञात नाम वाला मित्र कहा था। जब तक वह न मिले तब तक जीवन का गीत पूरा नहीं होगा।

परन्तु यह तो दूसरे लोगों की बात है। आप सात दिन तक मेरी शुष्क बातें सुनते रहे। वस्तुतः आपके हृदय में आत्मदर्शन की अभिलाषा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उस परम पुरुष की कृपा आप पर हो, आपका जीवन–गीत सफल हो, ज्योति का सागर उमड़ पड़े उसमें, आत्मा की इस ज्योति में आपको उस महाज्योति के दर्शन हों, जिसे देख लेने के पश्चात् और कुछ भी देखना शेष नहीं रहता।

।। ओ३म् शम्।।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 04 का शेष

"आज तो धंधा...

'अरे भाई, आप तो मेरी हर बात को काट रहे हैं। पर अब मैं ऐसी बात बोल रहा हूँ जिसके खंडन में आप कुछ नहीं कह सकते और वह बात है, मंत्र का अन्तिम भाग–'**मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्**' अर्थात् किसी को एक पल भी कष्ट न हो। कहिये क्या कहना चाहेंगे आप इस बारे में?"

"मान्यवर, माना कि यह मंत्रांश बहुत ही सुन्दर और सारगर्भित है पर पुराने समय में इस मन्त्र भाग के वक्ता और श्रोता दोनों उच्च कोटि के होते थे लेकिन आज कल न तो वे पुण्यात्मा वक्ता रह गए हैं और न हिताकांक्षी श्रोता।"

मैं सोचने लगा, कैसे विचित्र हैं ये पंडित जी, जो वेद मंत्र इनकी आजीविका का आधार हैं, उन्हीं के प्रति इतनी अनास्था! फिर मेरे मन में आया कि दोष इनका भी नहीं है। ये जिस प्रकार का अन्न खायेंगे, उसी प्रकार का मन बनेगा। जैसा इनका मन होगा उसी प्रकार की वाणी बोलेंगे। इनका मंत्र के अर्थ से कोई मतलब नहीं, इनका मतलब है रुपये–पैसे से। इनकी दृष्टि में मंत्र का एक–एक शब्द एक–एक सिक्का है जिसे फेंक कर ये मृतक के सम्बन्धियों को खरीद लेते हैं।

मैं गम्भीरता पूर्वक सोचता हूँ कि मंत्र वही है, मंत्रार्थ भी वही है। प्राचीन काल में इन्हीं वैदिक मंत्रों के द्वारा तत्कालीन समाज आध्यात्मिक स्वास्थ्य व सुख प्राप्त करता था लेकिन ऐसा लगता है कि आधुनिक समाज ऐसे असाध्य रोग से ग्रस्त है जहाँ वेद मंत्र भी निष्प्रभावी प्रतीत होते हैं। हम वेद मंत्र तो बोलते हैं लेकिन हमारे मन में अनास्था का ऐसा मजबूत प्लास्तर लगा हुआ है कि सभी मंत्र हृदय रूपी मंदिर में प्रवेश करने के बजाय टकराकर बाहर आ जाते हैं।

मैं विचारमग्न था। इतने में मैंने देखा कि एक शव यात्रा श्मशान घाट की ओर बढ़ रही है। उसे देखकर पंडित जी की आँखों में चमक आ गई।

फिर वे मेरी ओर उन्मुख होकर बोले, "शर्मा जी, फिर कभी आइये, यह धंधे का समय है।"

मैंने उनके अभिप्राय को समझ लिया और वहाँ से खिसकने में ही अपना भला समझा।

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)
मो. 09639149995
07351733111

☞ पृष्ठ 06 का शेष

वृक्ष सजीव हैं...

(3) **वृक्षाभिसर्पणमित्यदृष्टकारितम्।।**
– वैशेषिक दर्शनः अध्याय–5, आह्निक–2, सूत्र–7

(वृक्ष में सब ओर होता हुआ जल का ऊपर तक फैलाव होना अदृष्ट शक्ति द्वारा कराया जाता है।) साइफन के नियम से जल अपने तल के ऊपर नहीं जा सकता; या फिर मोटर आदि से जाता है। वृक्षों में शीर्ष तक जल का पहुँचना उसमें विद्यमान जीव के कारण बताया गया है।

दयानन्द–समर्थन

महर्षि दयानन्द के वचनों को आर्यजन दोनों पक्षों में प्रस्तुत कर रहे हैं। तथापि तीन वचन निम्नवत् प्रस्तुत हैं:–

(1) '**यः प्राणतो निमिषतो**' (यजुर्वेद 25. 11) मन्त्र का भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द भावार्थ में लिखते हैं– "जो सूर्य न हो तो स्थावर वृक्ष आदि और जंगम मनुष्यादि अपना–अपना काम देने को समर्थ न हों।"

(2)ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के पुनर्जन्मविषय में 'द्वे सृती' मन्त्र के अर्थ में महर्षि दयानन्द लिखते हैं– "इस संसार में हम दो प्रकार के जन्मों को सुनते हैं। एक मनुष्यशरीर का धारण करना और दूसरा नीच गति से पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वृक्ष आदि का होना।"

(3)सत्यार्थप्रकाश (सम्मुलास–8) में महर्षि दयानन्द कहते हैं–"ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म; किन्हीं को सिंहादि क्रूर जन्म; किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु; किन्हीं को वृक्षादि कृमि, कीट–पतंगादि जन्म दिये हैं।"

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य आचार्य सत्यजित् जी ने अपनी पुस्तक 'जिज्ञासा समाधान' में विवेचन–पूर्वक स्पष्ट किया है (प्रकाशक– वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राजस्थान)। निष्कर्ष यह है कि महर्षि दयानन्द के मत में वृक्ष सजीव हैं।

6105, पतंजलि योगपीठ फेज–2
हरिद्वार–249405 (उत्तराखण्ड)
मो. – 9839181690

☞ पृष्ठ 07 का शेष

प्रेरक व्यक्तित्व : स्वामी ...

भर्ती करवाया। स्वामी जी का विचार था कि जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। उनका कहना था कि हमारे यहां टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, प्रिंसिपल हैं, उस्ताद हैं, मौलवी हैं पर आचार्य नहीं है। आचार्य अर्थात् आचारवान व्यक्ति की महती आवश्यकता है। चरित्रवान व्यक्तियों के अभाव में महान से महान व धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं। वह सत्य के पालन पर बहुत ज़ोर देते थे। उन्होंने लिखा है– "प्यारे भाइयो! आओ, दोनों समय नित्य प्रति संध्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सत्ता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों। सर्वदा सत्य का चिंतन करें। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित करें और कर्मों में भी सत्य का ही पालन करें।

दयानन्द सरस्वती की तरह वह भी हिन्दी के लिए आजीवन कार्य करते रहे। हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि के रूप में स्थापित करने हेतु उन्होंने बहुत प्रयास किए। 'सद्धर्म प्रचारक' नाम से एक पत्र उन दिनों उर्दू में छपता था। एक दिन अचानक ग्राहकों के पास जब यह पत्र हिंदी में पहुंचा तो सभी दंग रह गए क्योंकि उन दिनों उर्दू का ही चलन था। हिन्दी भाषा के प्रति उनका अनन्य प्रेम उनके स्वभाव के दृढ़ता से ही संभव हो पाया। उस समय में यह कदापि संभव नहीं था।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानंद की जीवन बहुआयामी था। सही मायने में वे भारत के अमर सपूत हैं। आज भी उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत बनकर युवा पीढ़ी को नई दिशा प्रदान कर रहा है। उनके जीवन, साहित्य और विचारों को आज की युवा पीढ़ी तक ले जाने की आवश्यकता है। हम जितना उनके व्यक्तित्व का प्रचार–प्रसार करेंगे भारत का कद उतना ही ऊंचा उठेगा। भारत को विश्व–गुरु बनाने की संकल्पना को पूरा करने के लिए स्वामी श्रद्धानंद के जीवन कर्म से प्रेरणा लेना ज़रूरी है।

हंसराज कॉलेज, दिल्ली।
संपर्क–9891172389

www.thearyasamaj.org

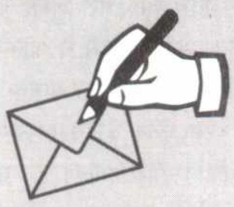

पत्र/कविता

नेत्रदृष्टि

चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै।
सं चेदं वि पश्येम्।। ऋ. 10.158.4.

सुखी हमारी सृष्टि कीजिये।
नेत्र दिए हैं, दृष्टि दीजिये।।
किये मनोरम नयन हमारे।
जैसे सुन्दर व्योम सितारे।
प्रखर दृष्टि बल इनमें भर दो,
जिससे देखें दृश्य तुम्हारे।
हरी भरी प्रभु कृष्टि कीजिये।
नेत्र दिए हैं, दृष्टि दीजिये।।
सम्पूर्ण जगत् हो हरा भरा।
परिवार एक हो वसुन्धरा।
पृथक् पृथक् सम्बन्ध निभायें,
पालन कर पावन परम्परा।
सजलमेध मधु वृष्टि कीजिये।
नेत्र दिए हैं, दृष्टि दीजिये।।
नेत्र लक्ष्य अवलोकन करते।
तभी तेज पग धावन करते।
जगत् शान्ति अभियान हमारा,
सजग नेत्र ही पालन करते।
प्रभुवर! यह उत्कृष्टि कीजिये।
नेत्र दिए हैं, दृष्टि कीजिये।

देव नारायण भारद्वाज
'देवातिथि'
अलीगढ़

आज कहाँ है वैदिक धर्म?

2011 की जनगणना में जब कुछ लोगों ने अपना धर्म वैदिक बताया तो जनगणना के अधिकारियों ने कहा कि वैदिक धर्म का तो उनके पास नाम ही नही है। इसलिए आर्य समाज की प्रतिनिधि सभा को केन्द्र सरकार से निवेदन करना चाहिये कि वह वैदिक धर्म को मान्यता प्रदान करे। परिवारों के वैदिक धर्मी बनने से ही आर्य समाज जीवित रहेगा। इस समय अधिकाश परिवार आर्य समाज नही हैं। वैदिक धर्म लिखने लिखाने से ही सब परिवार आर्य समाज बनेंगे।

आर्यो इससे ही आर्य समाज की उन्नति होगी और वह हमेशा जीवित रहेगा। महर्षि दयानन्द ने अपने मन्तव्यों में लिखा था–'आर्य समाज के रूप में मेरा कोई नया मत चलाने का विचार नहीं है मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है यह ब्रह्मा से जैमिनी मुनि तक चलता आया है। हिन्दू कोई धर्म नहीं है। इसमें तो कई अलग–अलग विचारों के लोग हैं हिन्दुस्तान के निवासी होने से अपने को हिन्दु कह सकते हैं। परन्तु ये नाम तो विदेशियों का दिया हुआ है इसलिए इसे छोड़ देना चाहिए। देश का नाम भी 'भारत' संविधान में माना गया है। धर्म और मत तो चलते रहते हैं। परन्तु सस्थायें सदा नही चला करतीं। धर्म को मनाने वाले अपने धर्म के पक्के होते हैं। सुप्रीम कोर्ट के एक मुख्य न्यायधीश भी 11–12–1995 को एक निर्णय में कहा की हिन्दू कोई धर्म नहीं है।

मैंने आर्य समाज के कई विद्वानों से प्रश्न पूछा कि संसार में वैदिक धर्म का कहीं अस्तित्व है? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तरी कोई भी विद्वान् दे नहीं सका, जिस पर मुझे बहुत दुःख हुआ कि हम लोग आर्य समाज के सत्संगों तथा अन्य उत्सवों पर 'वैदिक धर्म की जय' के उद्‌घोष तो खूब लगाते हैं परन्तु सरकारी कागज़ पत्रों में धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखते–लिखाते हैं जो कि कोई धर्म ही नहीं है। क्योंकि हिन्दू धर्म की कोई परिभाषा करना ही कठिन है। हिन्दुओं में अलग–अलग विचारधारा के लोग हैं। इन का कोई एक धार्मिक सिद्धान्त नहीं है। कोई ईश्वर को मानता है, कोई नहीं मानता। कोई ईश्वर को निराकार मानता है और कोई साकार मान कर मूर्ति पूजा करता है। कोई माँसाहार को पाप समझता है और कोई अपने देवी–देवताओं को भी शराब, मांस का भोग लगाता है। इसलिये कौन ठीक है और कौन गलत है? यह निश्चय करना ही कठिन है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने वेद के अनुसार हमारा धर्म वैदिक धर्म बताया था और यह कहा था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। क्योंकि यह नाम हमारे किसी भी धर्म ग्रन्थ में नहीं लिखा। उन्होंने 31 दिसम्बर 1880 ई. को आर्य समाज मुलतान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को एक पत्र में लिखा था कि जनगणना से सब लोग धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति के खाने में आर्य लिखायें परन्तु आर्य समाज के नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। जबकि इस बात का खूब प्रचार होना चाहिये था। ऐसा न होने के कारण आर्य समाज के अधिकांश लोग धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखाते जा रहे हैं। इसलिये हमारे परिवार भी वैदिक धर्मी नहीं बन सके। देखने में आया है कि ज्यादा परिवार आर्य समाजी अथवा वैदिक धर्मी नहीं हैं। आखिर किस–किस का नाम लिया जाये। हमारे कई बड़े–बड़े स्वर्गवासी नेताओं के परिवार भी आज आर्य समाजी नहीं हैं। अगर हमारे परिवारों में वैदिक धर्म को मान्यता दी जाती तो हमारे परिवार वैदिक धर्मी ही कहलाते और आर्य समाज के सत्सगों से वह दूर न रहते। आर्य समाज के पुराने सदस्य दिवंगत हो रहे हैं और नये बन नहीं रहे। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा? इसलिये जब तक वैदिक धर्म परिवारिक धर्म नहीं बनेगा तब तक आर्य समाज प्रगति नहीं कर सकता। वेद प्रचार की भी ठोस योजना बननी चाहिये।

पौराणिक सनातन धर्म का प्रचार तो अपने आप ही परिवार की महिलाओं द्वारा हो रहा है जबकि आर्य समाजियों की पत्नियाँ कोई तो राधा स्वामी गुरु को और कोई ब्रह्माकुमारी मत अथवा पौराणिक पूजा पाठ में लगी हुई है और कभी–कभी आर्य समाज के हवन आदि के कार्यक्रमों में आ जाती है। इसलिये हमारी सन्तानें भी दुविधा में रहती हैं कि कौन ठीक और कौन गलत है। आर्य नेता इस बारे में विचार करें तथा वैदिक धर्म सभी कागज पत्रों में लिखने लिखाने का प्रचार करें तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आ पायेगा। आखिर हम हिन्दू समाज के अंग तो हैं ही। एक आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जिसे हिन्दुओं की चिन्ता है जो आज तक इनकी रक्षा में प्रयत्नशील रहा है चाहे कोई माने अथवा न माने तथाकथित सनातनधर्मी लोग तो पाखण्ड और अंधविश्वास को ही धर्म बता बढ़ाते जा रहा हैं। इसलिये आर्य समाज अपने कर्त्तव्य को पहिचाने और यह प्रचार करता रहे कि हमारे पूर्वज श्री राम, श्री कृष्ण आर्य ही थे न कि हिन्दू, और हम भी गर्व से अपने आपको आर्य कहें कहलाये। कवि की पंक्तियाँ सब याद रखें–

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है यज्ञ योग हमारा कर्म।
सत्य हमारा लक्ष्य है, गायत्री महामंत्र।
भारत हमारा देश है, सदा रहे स्वतंत्र।।

अश्विनी कुमार पाठक
मकान नं. 26 टाईप 4
रिची रोड नं. 21 कोलकाता–700019

****

मालवीय जी ने सबसे बड़ी गलती किसे कहा था?

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी कट्टर सनातन धर्मी हिन्दू थे। मृत्यु पर्यन्त कांग्रेस में रहे थे। 1915 में सामाजिक कार्य करने के लिए आपने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा की स्थापना के लिए सक्रिय होकर कार्य किए। 1936 में हिन्दू महासभा (हिमस) के लिए एक करोड़ रुपए एकत्र करने का संकल्प लिया किन्तु यह पता चलने पर कि वह शीघ्र ही राजनीतिक पार्टी बनने वाली है रुपये एकत्र नहीं किए और हिमस से अलग हो गए।

1946 में जब उन्हें पता लगा कि कांग्रेस धर्म के आधार पर देश का विभाजन मानने के लिए राजी हो गई है तब वे पाकिस्तान में हिन्दुओं के प्रस्तावित उत्पीड़न पर एकान्त में नौ–नौ धार आंसू बहा कर रोते थे। अपनी मृत्यु (12–11–1946) से कुछ दिन पूर्व उन्होंने रोते हुए कहा था कि उनके जीवन की सबसे बड़ी गलती यह थी कि उन्होंने हिन्दू महासभा को छोड़ दिया था जबकि उन्हें कांग्रेस छोड़नी चाहिए थी।

मालवीय जी के समर्थकों से अपील की जाती है कि वे सेकुलर पार्टियाँ छोड़कर राष्ट्रवादी हिन्दू महासभा में आकर उसे बड़ा करें।

आई. डी. गुलाटी
संस्थापक हिन्दू महासभा
18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर
मो. 08958778443

****

www.thearyasamaj.org

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ने महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि दी

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर में महात्मा हंसराज की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। प्राचार्या ने इस अवसर पर बोलते हुए छात्रों को बताया कि महात्मा हेसर एक नम्र व्यवहार रखने वाले परिवार से संबंध रखते थे। जब वह 12 वर्ष के थे तो उनके पिता जी की मृत्यु हो गई थी। जब हंसराज जी एक विद्यार्थी थे और उस समय वह स्वामी दयानंद जी की शिक्षाओं के सम्पर्क में आए।

आर्य समाज के सम्पर्क में आकर उन्हें इस बात ने प्रभावित किया कि वे एक ईश्वर में विश्वास रखते हैं, मूर्ति पूजा और जात-पात को नहीं मानते हैं और वेदों की ओर वापिस चलने की प्रेरणा देते हैं इन्हीं बातों ने उन्हें एक आम जीवन से उभारा।

उनका जीवन सम्पूर्ण और निःस्वार्थ भावना की सफल उदाहरण है। विद्यार्थियों ने यह सब उनके प्रेरणात्मक जीवन के बारे में बताते हुए बताया। महात्मा हंसराज जी ने स्वयं ही आर्य समाज की सेवाओं का कार्यभार संभाला और लाहौर में उन्हें दयानंद ऐंग्लो वैदिक स्कूल के प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को समाज के प्रति अपनी सेवाओं को प्रतिपादित करते हुए एकता और भाईचारे का प्रचार करने के लिए, प्रोत्साहित किया।

विद्यार्थियों ने इस अवसर पर आर्य समाज के सिद्धांतों पर चलने की और एक सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति बनकर जीवन में अच्छे मूल्यों को आत्मसात करने की शपथ ली। विद्यार्थियों ने देश को अज्ञानता के अंधकार दूर कर, ज्ञान के प्रकाश में लाकर अपने सपनों को पूरा करने पर विचार सांझे किए।

स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. श्रीमती नीरा शर्मा जी ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि महात्मा हंसराज जी जैसा कहते थे वैसा करते थे। संध्या, स्वाध्याय, समाज सत्संग, स्वदेश और सेवा के पाँच उपदेशों को लेकर वह जिए। उन्होंने विद्यार्थियों को एक अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उनके द्वारा बताए गए पथ पर अग्रसर करने के लिए कहा।

डी. ए. वी. सफिलगुड़ा , हैदराबाद की समाज सेवा

युवा आर्य समाज मे अपनी सहभागिता निभाते हुए डी. ए. वी. सफिलगुड़ा (हैदराबाद) के विद्यार्थी जरूरतमंदो की सहायतार्थ दान राशि एकत्रित करते हैं। यह दान राशि वे अपने जन्मदिवस के अवसर पर, विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार स्वरूप मिलने वाली धन राशि को दान देकर करते हैं। प्रधानाचार्या जी एवं शिक्षिकाओं द्वारा प्रोत्साहित करने पर प्रार्थना सभा का आयोजन करने वाली कक्षा भी सामूहिक रूप से कुछ धन, स्टेशनरी, खाद्य सामग्री एवं कंबल आदि दान में देती हैं। इस दान राशि का प्रयोग–

1) सेन्टर फार सोशल सर्विस , हयातनगर (हैदराबाद)

2) अर्ध विकसित सरकारी स्कूल, बानूरजीपेट (वरंगल)

3) नेस्ट वृद्धाश्रम , नेरडमेट (हैदराबाद) नामक विभिन्न संस्थाओं में रहने वाले अनाथ बच्चों एवं वृद्धों की सहायतार्थ किया जाता है।

डी. ए. वी. कोटा में आयोजित हुआ रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस

डी.ए.वी कोटा विद्यालय परिसर में आज प्रातः 19 दिसम्बर को कक्षा दशमी के छात्रों के साथ अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान दिवस पर देवयज्ञ का आयोजन किया गया । यह यज्ञ विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम के मुख्य यजमानत्व एवं विद्यालय के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में विद्यालयस्थ यज्ञशाला में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त शोभाराम आर्य के द्वारा अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर विस्तृत चर्चा करते हुए छात्रों को विस्मिल जी के त्याग एवं आर्य समाज से प्रेरित जीवन एवं देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु किए गए उनके द्वारा किए गए कार्यों से परिचित कराया गया।

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान के महत्व से अवगत कराते हुए छात्रों को बताया गया कि उनके जीवन पर महर्षि दयानन्द द्वारा रचित अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का अत्यधिक प्रभाव था जिसको पढ़कर उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। देश की आजादी में एक महत्वपूर्ण घटना के कारण राम प्रसाद को एवं उनके साथियों को विशेष रूप से स्मरण किया जाता है जिसे काकोरी रेल घटना के नाम से जाना जाता है।

तत्पश्चात विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन से हमें जीवन में .दृढ़ता से अपनी बात पर अटल रहना सीखना चाहिए। आर्य समाज ने रामप्रसाद जी जैसे अनेक प्रसिद्ध देशभक्त देकर देश को स्वतन्त्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्य समाज का इतिहास समाज सुधार, शिक्षा एवं देश को स्वतन्त्र कराने जैसे क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्यो से भरा हुआ है जिस पर हमें गर्व है। इस अवसर पर मैं अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

विद्यालय में ऐसे अवसरों पर किए जाने वाले यज्ञों में उन छात्रों को विशेष रूप से यज्ञ में आहुति देने का सुअवसर प्रदान किया जाता है जिनका उस दिन जन्मदिन होता है। आज भी ऐसा ही एक छात्र अपने परिवार सहित उपस्थित था।

अशुद्धि शोधन

आर्य जगत् (18 दिसम्बर से 24 दिसम्बर) में "स्वामी श्रद्धानन्द की राष्ट्रवादिता" शीर्षक से डॉ. महावीर मीमांसक का एक लेख पृष्ठ 7 पर छपा है।

इस लेखक में दूसरे कालम में 'राष्ट्रीय आन्दोलन' शीर्षक वाले अनुच्छेद की दूसरी पंक्ति में "स्वच्छता–आन्दोलन" शब्द गलत छप गया है। पाठक इसे "स्वतन्त्रता आन्दोलन" पढ़ें। प्रूफ संशोधन की इस त्रुटि के लिए खेद है।

—सम्पादक

चुनाव समाचार

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा (पं) का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रधान	श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा
महामन्त्री	श्री चतर सिंह नागर
कोषाध्यक्ष	सुरेन्द्र कुमार गुप्त

आर्य उप–प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा

प्रधान	श्री आर्य सत्यदेव गुप्ता
मन्त्री	श्री बृजराज सिंह परमार, एडवोकेट
कोषाध्यक्ष	श्री राजीव दीक्षित

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 21/22-12-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सेक्टर - 14, गुड़गाँव में आयोजित सी.बी.एस.ई. क्षेत्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का समापन समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–14, गुड़गाँव में सी.बी.एस.ई. द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय क्षेत्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का समापन समारोह 17 दिसम्बर, 2016 को किया गया। इस कार्यक्रम में पंचकुला क्षेत्र के लगभग 75 विद्यालयों ने भाग लिया। कार्यक्रम के तीसरे दिन भी सभी प्रतिभागी छात्र अपने अद्वितीय मॉडलों का व्याख्यान बहुत ही उत्साह के साथ कर रहे थे। मुख्य अतिथि डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष तथा विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रबोध महाजन जी की उपस्थिति ने डी.ए.वी. प्रांगण को गरिमा प्रदान की। विद्यालय के प्रबंधक श्री आर.आर. भल्ला की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा का संवर्धन किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ परम्परानुसार 'सूर्य वंदना' द्वारा किया गया जिसने सभागार में उपस्थित जनों को भावविभोर कर दिया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा एरी जी ने सभागार में हमारे विद्यालनय के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कुछ मॉडलों का विवरण देते हुए युवाओं में अंतर्निहित प्रतिभा के साथ–साथ उनकी क्षमता, धैर्य तथा रचनात्मक गुणों की प्रशंसा की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रबोध महाजन जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि छात्रों के मॉडलों को देखकर उनकी प्रतिभा का बखान नहीं किया जा सकता। उन्होंने प्राकृतिक चरित्र के लिए वैदिक संस्कृति को महत्वपूर्ण बताया। अपने वक्तव्य के अंत में बच्चों को आत्मचिंतन का संदेश दिया।

कार्यक्रम के अगले पक्ष में 21 मॉडलों को राष्ट्रीय स्तर की सी.बी.एस.ई. विज्ञान प्रदर्शनी में सम्मिलित करने की घोषणा की गई तथा अंततः राष्ट्रगान के साथ की कार्यक्रम का समापन किया गया।

डी.ए.वी. बिलगा के खिलाड़ियों का वर्चस्व रहा

एस.आर.टी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बिलगा ने स्कैन टूर्नामैंट में ओवर आल ट्रॉफी पर लगातार छठी बार कब्जा करते हुए अपनी धाक जमाई। अंडर 19 लड़कों में विकास ऋषि, अंडर 14 लड़कों में दविन्दर सिंह और अंडर 19 लड़कियों में गुरप्रीत कौर को वैस्ट एथलीट के रूप में सम्मानित किया गया।

विकास ऋषि ने 400 मीटर में स्वर्ण, सिमरन ने 100 मीटर और 200 मीटर गुरप्रीत कौर ने 400 मीटर और 800 मीटर में, रमनप्रीत कौर ने शॉट पुट में, दविन्दर सिंह ने 100 मीटर में, 200 मीटर में, और लम्बी कूद में, आमिर खान ने 50 मीटर में, जसप्रीत कौर ने 50 मीटर में अपने–अपने वर्ग में स्वर्ण पदक जीते

स्कूल वापस आने पर सभी खिलाड़ियों का भव्य स्वागत किया गया। स्कूल के प्रिंसिपल श्री रवि शर्मा ने इस उपलब्धि का श्रेय स्कूल के शरीरिक शिक्षा निदेशक को देते हुए कहा कि वे विद्यार्थियों को और खेल अवसर उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

उल्लेखनीय है कि स्पोर्टस एंड कल्चरल एसोसिएशन ऑफ नूरमहल द्वारा आयोजित इस टूर्नामैंट में नूरमहल सहित तीन लाक्स के पब्लिक स्कूलों ने भाग लिया वा लगातार छठी बार ओवर ऑल ट्रॉफी जीतने पर स्कूल की क्षेत्रीय निर्देशिका श्रीमती पी. पी. शर्मा, मैनेजर रेखा कालिया और स्कैन के प्रधान आर. एस हुडंल ने अपने बधाई संदेश भेजे।

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. सोलन के तत्वावधान में तीन दिवसीय योग शिविर आयोजित

एम.आर.ए.डी.वी. पब्लिक स्कूल में प्रधानार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन में तीन दिवसीय वैदिक योग शिविर का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस योग शिविर में कक्षा आठवीं से दसवीं तक के लगभग 200 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इस शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, एकाग्रता तथा शारीरिक श्रम व योग के महत्व के बारे में जानकारी देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ शुक्रवार प्रातः प्रधानाचार्या के यजमानत्व में वैदिक हवन के साथ किया गया। हवन के पश्चात प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने भी इस योग सत्र में भाग लेते हुए बच्चों के साथ योगाभ्यास किया। उसके बाद सभी ने भस्त्रिका, अनुलोम–विलोम, कपाल–भाती, उज्जैनी, भ्रामरी, शीतली आदि प्राणयामों का अभ्यास किया। फिर ध्यान तथा उसके बाद पर्वतासन, वज्रासन, त्रिकोण आसन, अर्धचक्रासन, भुजंगासन, मत्स्यासन, अर्धसर्वांग आसन, शलभासन, नौकासन सूर्य नमस्कार आदि योगासनों का अभ्यास किया। इस शिविर में आर्य युवा समाज की ओर से श्री दीपक उपाध्याय, विनय शर्मा, निशा वर्मा एवं सोनल सूद ने इस शिविर के आयोजन में अपना सहयोग दिया।

स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने विद्यार्थियों की योगासनों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुये योग के महत्व के बारे में अवगत कराया। उन्होंने जीवन में योग के महत्व का वर्णन करते हुए यम, नियम एवं आसन के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि यम व नियम से सामाजिक व व्यक्तिगत उन्नति सम्भव है वहीं आसन से व्यक्तित्व में निखार आने के साथ साथ शरीर स्वस्थ एवं निरोग बना रहता है। योग से शारीरिक, आत्मिक, मानसिक और बौद्धिक शक्ति का विकास होता है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हुए योग को अपनाने तथा अपने व्यक्तित्व के विकास की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**